वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 140 | शुक्रवार 13 सितम्बर 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने जापान सरकार के मंत्रियों से मुलाकात की

जापान यात्रा के दूसरे दिन होंडा, वाफुकु ग्रुप, तोहो ग्रुप के प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री शर्मा के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की

राज्य में इलेक्ट्रिक व्हीकल , इंफ्रास्ट्रक्चर, स्किल, टूरिज्म, एनर्जी स्टोरेज जैसे क्षेत्रों में निवेश और सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की। राजस्थान सरकार के प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठक के दौरान होंडा मोटर के अधिकारियों ने कंपनी की दीर्घकालिक और विस्तार योजनाओं में राजस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका बताई

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने गुरूवार को जापान सरकार के मंत्रियों से बातचीत की और राजस्थान में निवेश को सुविधाजनक बनाने में जापान के निरंतर सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की। इनमें अर्थव्यवस्था, व्यापार और उद्योग के संसदीय उप-मंत्री इशी ताकू और लैंड, इंफ्रास्ट्रक्चर, ट्रांसपोर्ट और पर्यटन मंत्रालय) के संसदीय उप-मंत्री इशीबाशी रिंटारो के साथ हुई बैठकें शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने उन्हें दिसंबर में आयोजित ''राइजिंग राजस्थान'' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट– 2024 में भाग लेने के लिए भी आमंत्रित किया। जापानी कंपनियों के साथ व्यावसायिक सहयोग का विश्वास जताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि ऑटोमोटिव, इलेक्ट्रिक व्हीकल , एनर्जी स्टोरेज, इंफ्रास्ट्रक्चर, अक्षय ऊर्जा, पर्यटन, केमिकल और पेट्रोकेमिकल्स, स्वास्थ्य, शिक्षा और कौशल विकास जैसे क्षेत्र सरकार की प्राथमिकता हैं और इनमें निवेश के अनेक अवसर मौजूद हैं। इसके अलावा, मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल ने होंडा मोटर कंपनी लिमिटेड, वाफाकू हॉस्पिटल्स एंड होम केयर ग्रुप, तोहो ग्रुप सहित अन्य प्रमुख जापानी फर्मों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ भी मुलाकात की। होंडा मोटर के साथ हुई बैठक के दौरान कंपनी के अधिकारियों ने राज्य में दी गई मौजूदा सुविधाओं, अवसरों और राजस्थान सरकार के निरंतर समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि राजस्थान उनके दीर्घकालिक और विस्तार योजनाओं में प्रमुख रूप से शामिल है। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने राज्य में ईलेक्ट्रिक व्हीकल क्षेत्र में निवेश के अवसरों और संभावनाओं की चर्चा की और सुझाव दिया कि जोधपुर पाली मारवाड़ औद्योगिक क्षेत्र के अंदर ईवी इकाई के लिए कंपनी संभावित जगह तलाश सकती है। इसके अलावा वाफुकु अस्पताल और होम केयर समूह के अधिकारियों ने भी मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाले उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल के मुलाकात की। इस बैठक में कंपनी के अधिकारियों ने राजस्थान में एक अस्पताल और जापानी भाषा संस्थान स्थापित करने में अपनी रुचि जतायी और कहा कि इससे 5-6 सालों में तकरीबन 10,000 लोगों को प्रशिक्षित किया जा सकेगा। जापानी कंपनी तोहो ग्रुप के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की, जिस दौरान मुख्यमंत्री ने प्रदेश में निवेश के अवसरों और कारोबार को अनुकूल बनाने के सरकार के प्रयासों के बारे में बात की। इस अवसर पर उन्होंने तोहो ग्रुप को राजस्थान में निवेश करने और अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए भी आमंत्रित किया। इससे पहले, सुबह मुख्यमंत्री और प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्यों ने टोक्यो में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। विभिन्न कंपनियों से मुलाकात के बाद इस प्रतिनिधिमंडल ने टोक्यो में भारतीय दूतावास के अधिकारियों से भी मुलाकात की। राजस्थान सरकार का यह प्रतिनिधिमंडल अब एक अन्य जापानी शहर ओसाका के लिए रवाना हो गया है जहां कल कई जापानी फर्मों के साथ एक और इन्वेस्टर्स मीट आयोजित की गई है। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में जापान दौरे पर गए प्रतिनिधिमंडल में उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेम चंद बैरवा, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव शिखर अग्रवाल, उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के प्रमुख शासन सचिव अजिताभ शर्मा तथा रीको और बीआईपी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं। राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट– 2024 का आयोजन आगामी 9, 10 और 11 दिसंबर को जयपुर में होगा। इसका आयोजन राजस्थान सरकार के तत्वाधान में उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टमेंट प्रोमोशन (बीआईपी) और राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट एंड इन्वेस्टमेंट कॉरपोरेशन (रीको) के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है, जिसका नोडल विभाग बीआईपी है।

आदिनाथ पब्लिक स्कूल में हिंदी दिवस समारोह मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया

12 सितंबर 2024 , गुरुवार को सांगानेर स्थित आदिनाथ पब्लिक स्कूल में हिंदी दिवस समारोह बहुत ही उत्साहपूर्वक मनाया गया । कार्यक्रम में जहां कक्षा नर्सरी से चौथी कक्षा तक के छात्र - छात्राओं ने अपने काव्य - पाठ द्वारा सभी को आनंदित किया वहीं दूसरी ओर कक्षा पांचवीं से आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने महान संत कवि कबीर , तुलसी,रहीम एवम मीराबाई के शिक्षाप्रद एवम सारगर्भित दोहों की सुंदर प्रस्तुति के द्वारा सभी को भाव विभोर कर दिया। इस अवसर पर विद्यालय की आचार्या डॉ. पवना शर्मा ने सभी को हिंदी - दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और कहा कि हमें अपने हिंदी भाषी होने पर गर्व होना चाहिए तथा हमें इसकी समृद्धि एवं विकास हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

अनुसरण स्टेडियम में क्रिकेट प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

भरत और बाहुबली टीम का हुआ चयन, बाहुबली टीम के खिलाड़ियों ने जीता खिताब

निवाई. शाबाश इंडिया। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में जैन मुनि अनुसरण सागर महाराज के सानिध्य में आयोजित दस दिवसीय दशलक्षण महापर्व के तहत सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें श्रद्धालुओं द्वारा क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित हुई। चातुर्मास कमेटी अध्यक्ष सुनील भाणजा एवं मीडिया प्रभारी विमल जौंला ने बताया कि शांतिनाथ जैन मंदिर में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। कार्यक्रम स्थल पर प्रदीप जैन माधोराजपुरा के नेतृत्व में दो टीमों का चयन किया गया जिसमें भरत और बाहुबली टीम चयन होकर अनुसरण स्टेडियम पहुंचीं। जहां सभी खिलाड़ियों ने अपनी तैयारियों के साथ क्रिकेट खेला।

लायन्स क्लब जयपुर मेट्रो द्वारा शिक्षक दिवस पर 31 शिक्षकों का किया सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया

शिक्षक दिवस समारोह राजकीय महाविद्यालय, जयपुर में मनाया गया। सर्व प्रथम मां सरस्वती को माल्यार्पण किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ स्निग्दा शर्मा ने स्वागत भाषण दिया। डॉ दीपक शर्मा अध्यक्ष, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षणिक महासंघ ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुकुल संस्कारों को अपनाना चाहिए। लायंस क्लब के अध्यक्ष अनिल जैन रिटा. आईपीएस ने शिक्षक समारोह की बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की। सचिव लायन विमल गोलेछा ने शिक्षक दिवस समारोह की बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए विद्यार्थियों को कहा कि अपने पुराने संस्कारों को जीवित रखने की बात कही। शिक्षकों के सम्मान का कार्यक्रम में कुल 31 शिक्षकों का सम्मान किया गया शिक्षकों के सम्मान के साथ साथ प्राचार्य द्वारा उनकी उपलब्धियों की जानकारी दी। प्रत्येक शिक्षक को माल्यार्पण कर, पोधें सहित गमलें भेंट किये

गये। इस अवसर पर क्लब की ओर से लायन गोविंद शर्मा, लायन अनिल जैन (कोषाध्यक्ष), लायन अविनाश व्यास, लायन अनिल माथुर, लायन डॉ राजेन्द्र कुमार जैन, लायन नेमी पाटनी , लायन भाग चंद जैन , लायन डॉ नमोकार जैन आदि थे । मंच संचालन डॉ रजनी मीणा द्वारा किया गया।

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में बच्चों ने दिए सामाजिक और देशभक्ति के संदेश

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन मंदिर महल योजना में आयोजित फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में बच्चों ने अपने संवाद और परिधान से सभी का मन मोह लिया। समिति समन्वयक अभिषेक सांघी ने बताया की इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य बच्चों में सृजनात्मकता और सामाजिक सरोकार के प्रति जागरूकता फैलाना था। युवा मंडल के धीरेंद्र और नमन के कहा की कार्यक्रम में बच्चों ने धार्मिक, सामाजिक, पर्यावरण, भारतीय संस्कृति और राष्ट्रहित से जुड़े विभिन्न मुद्दों और पात्रों को मंच पर प्रस्तुत किया। महिला मंडल की मोना और प्रभा जैन ने सभी बच्चों की सराहना करते हुए कहा, इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ बच्चों में न केवल आत्मविश्वास बढ़ाती हैं, बल्कि उन्हें अपने देश और समाज के प्रति ज़िम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित भी करती हैं। समारोह में मौजूद अभिभावकों और अतिथियों ने भी बच्चों के प्रयासों की खूब सराहना की और इस तरह की प्रतियोगिताओं को बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक बताया।

गुणवान ही गुणों की कद्र कर सकता है : युवाचार्य महेंद्र ऋषि जी महाराज

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नेई। गुणवान ही गुणों की क्रद कर सकता है अवगुणी नहीं। गुरुवार को एएमकेएम जैन मेमोरियल सेंटर के आनन्द दरबार में श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी महाराज ने पुच्छिस्सुणं संपुट की दूसरी गाथा के जाप के दौरान गाथा की महिमा बताते हुए कहा कि जो गुणवान है, वे ही गुणों की महिमा जानते हैं। जिस तरह एक चूहा हाथी की ताकत नहीं जान सकता, उसी प्रकार गुणवान ही गुणों की कद्र कर सकता है। गुणवानों के मध्य गुणों की चर्चा होती है। उन्होंने कहा ज्ञान बहुत बड़ा विषय है। महापुरुषों के ज्ञान को जानो। अन्य फालतू के प्रश्न करना बेमानी है। संसार के सारे रिश्ते हमें भटकाने वाले, मन में राग-द्वेष पैदा करने वाले हैं। महापुरुषों का परिचय पूछना है तो उनके ज्ञान को जानो। केवल पढाई, डिग्री का ज्ञान ज्ञान नहीं है। ज्ञान वह है, जो भोग को रोग समझें। सामान्य मनुष्य का ज्ञान सामान्य रूप से दिखाई देने वाली चीज देखता है। गुणी व्यक्ति में भीतर से आवाज सुनने, समझने की क्षमता होती है। वह अंदर रहे ज्ञान का अनुभव करता है। वह भीतर से उसे महसूस कर सकता है। यदि हमें सत्य का साक्षात्कार करना है तो गुणों का अनुभव करके जीवन को सफल बनाएं। उन्होंने कहा अभी पुच्छिस्सुणं संपुट की साधना चल रही है। महावीर भगवान पर कैसा भी उपसर्ग आया लेकिन उन्होंने अपने आत्मविश्वास को कम नहीं होने दिया। बाहर के पदार्थों को दूर रखने वाला वीर कहलाता है। भगवान महावीर की स्तुति, गुणगान आज दूसरी गाथा के माध्यम से हुई। आज जिस गाथा का स्वाध्याय किया, उसके बारे में जम्बू स्वामी से पूछा गया कि वह कौन है, जिसने यह धर्म बताया। कई लोग टाइमपास के लिए पूछते हैं लेकिन यह पूछने वाले ठोस लोग हैं। हालांकि जंबू स्वामी महावीर के प्रशिष्य थे। उन्होंने सुधर्मा स्वामी से पूछा। उन्होंने कहा निश्चय निरंतरता से होता है। हम जब आनंद ऋषिजी के जीवन को याद करते है तो पाते हैं कि उनका जीवन एक सादे संत महात्मा जैसे था। उनमें न कोई आडंबर रहता था, न ही दिखावा। सुधर्मा स्वामी भगवान महावीर के साथ तीस वर्ष रहे। उनको महावीर का प्रत्यक्ष सान्निध्य मिला।

जैन धार्मिक हाऊजी का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर वरुण पथ मानसरोवर जयपुर में विराजमान परम पूज्य आचार्य गुरुवर आचार्य श्री शशांक सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में चल रहे दशलक्षण महापर्व महोत्सव के अवसर पर समाज समिति द्वारा जैन धार्मिक हाऊजी का आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष चंद जैन, दिगंबर जैन पदयात्रा संघ जयपुर के संयोजक भागचंद गोधा, प्रसिद्ध समाजसेवी विनय स्नेहलता सोगानी, राजस्थान जैन युवा महासभा के अध्यक्ष प्रदीप जैन, महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा एवं सम्मनीय अतिथियों के रूप में अनिल चित्रा जैन, विजय संतोष जैन कालाडेरा वाले, राकेश ममता चांदवाड, चंदा देवी महेंद्र कासलीवाल, आकाश तिजारिया, राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के अध्यक्ष संजय जैन, पदयात्रा संघ के पूर्व संयोजक राजेंद्र जैन मोजमाबाद, देवेंद्र गिरधरवाल, राजकुमार बड़जात्या, विजय

बेनाडा, श्रीमती मोना जैन ने अपनी गरिमामई उपस्थिति प्रदान की। कार्यक्रम का विधिवत्त शुभारंभ मंगलाचरण के माध्यम से सुप्रसिद्ध भजन गायक विकास काला ने किया। कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों का तिलक एवं माल्यार्पण कर समाज समिति के अध्यक्ष एमपी जैन, मंत्री ज्ञान बिलाला, कोषाध्यक्ष कैलाश सेठी एवं सभी कार्यकारिणी सदस्यों ने स्वागत अभिनंदन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विनय सोगानी एवं समाज समिति के उप संगठन मंत्री मुकेश कासलीवाल द्वारा प्रस्तुत भजन एवं विजय बेनाडा के नागिन नृत्य ने कार्यक्रम को अनंत ऊंचाइयां प्रदान की हाऊजी के सभी विजेताओं नीलम जैन, विपिन जैन, विकास काला ,मिकिता जैन, उषा जैन, मंजू जैन, कविता जैन, दीपक गोधा, अनंत जैन, अनिला बड़जात्या को आकर्षक पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक विनेश सोगानी ने किया।

वेद ज्ञान

समाज सेवा करने की एक लगन होती है

हर आदमी के जीवन में किसी न किसी बात की लगन होती है। यह लगन समाज सेवा से लेकर किसी भी प्रकार की हो सकती है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अनेक लोगों ने देश-प्रेम के चलते हंस-हंस कर प्राण गंवा दिए थे। अति यानी अधिकता नुकसानदेह होती है। किसी सीमा में रहकर यदि किसी प्रकार की लगन मन में लगा ली जाए तो यह जीवन को उमंगों से भर देती है। घर को, समाज या देश को बर्बाद कर देने वाले शौक अपने यहां वर्जित हैं। इनका त्याग स्वहित में भी जरूरी है। समाज है तो यहां लोग भी अनेक प्रकार के मिलेंगे। इन सबके शौक भी निश्चय ही अलग-अलग होंगे। यहां एक बात यह ध्यान देने योग्य है कि जो शौक सकारात्मक या रचनात्मक होते हैं, समाज उन्हें ही मान्यता देता है और लोग उसी की प्रशंसा भी करते हैं। जो शौक समाज में वर्जित हैं, जो विध्वंसात्मक हैं, जिनसे व्यक्ति या समष्टि को नुकसान पहुंचता है, उसका तुरंत परित्याग कर देना चाहिए। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक असहाय और दीन व्यक्ति, जहां कहीं भी लावारिस लाशें देखता था, तुरंत लोगों से कुछ मांगकर उस लाश की अंत्येष्टि कर देता था। यह विचित्र प्रकार की लगन थी, लेकिन उसकी सोच सकारात्मक थी। समाज के लिए इसमें दया और करुणा का संदेश भी था। वह इस कर्म को भगवान की सेवा मानता था। उसके इस कार्य ने उसे सामान्य से खास व्यक्ति बना दिया, जबकि वह स्वयं लावारिस था। धरती उसका बिछौना और आसमान चादर था। उस व्यक्ति ने जीवन पर्यंत अपने इस शौक को जारी रखा। देश में अनेक लोगों ने अपने अच्छे शौकों के कारण बहुत ख्याति अर्जित की। चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो या ज्ञान का। चाहे वह व्यक्ति का क्षेत्र हो या वैराग्य का। ज्ञानी को भगवान को जानने की लगन है तो वैज्ञानिक को मानवता की सेवा के लिए नए आविष्कारों की। इसी प्रकार भक्त भगवान के दर्शनों के लिए आतुर है तो विरागी त्याग को पराकाष्ठा पर पहुंचाने के लिए व्याकुल। भगवत चिंतन में मीरा और चैतन्य महाप्रभु इतने रम जाते थे कि नृत्य करने लगते थे। भगवान से उनकी लगन ही ऐसी थी।

संपादकीय

राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग पर लगाया 10 लाख का जुर्माना

सरकारी कामकाज हो या फिर व्यावसायिक या निजी काम, निष्पक्षता का पैमाना हर जगह होना चाहिए। अपने प्रभुत्व का अहसास कराने या दुर्भावना से किसी मामले को बेवजह उलझाने की कोशिश किसी भी सूरत में उचित नहीं कही जा सकती। उच्चतम न्यायालय के एक ताजा फैसले ने इस तथ्य को और पुख्ता कर दिया है। शीर्ष अदालत ने एक मेडिकल कालेज में सीट बढ़ाने की मंजूरी से जुड़े मामले में राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) को कड़ी नसीहत दी है। अदालत ने अपने फैसले में कहा कि एनएमसी सरकार का एक अंग है और उससे निष्पक्ष और तर्कसंगत तरीके से काम करने की अपेक्षा की जाती है। किसी संस्थान को मंजूरी के लिए एक अदालत से दूसरी अदालत का चक्कर लगवाना सिर्फ परेशान करने का प्रयास है। न्यायालय ने एनएमसी और अन्य याचिकाकर्ताओं पर दस लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। यह बात छिपी नहीं है कि लोगों को छोटे-छोटे कामों के लिए सरकारी कार्यालयों के कई बार चक्कर काटने पड़ते हैं। अक्सर उन्हें कथित जरूरी औपचारिकताओं में इतना उलझा दिया जाता है कि वे बुरी तरह हताश हो जाते हैं। शीर्ष अदालत पहुंचा मेडिकल कालेज का मामला भी सरकारी संस्थाओं की इसी परिपाटी का उदाहरण है। इस कालेज को ''मेडिकल असेसमेंट ऐंड रेटिंग बोर्ड'' की ओर से पहले शैक्षणिक सत्र 2023-24 के लिए सीट की संख्या बढ़ाने की मंजूरी दी गई और कुछ माह बाद तकनीकी कारणों का हवाला देते हुए उसे वापस ले लिया गया। पिछले वर्ष अक्तूबर में उच्चतम न्यायालय ने देश के कुछ चिकित्सा महाविद्यालयों में प्रशिक्षु चिकित्सकों को देय अनिवार्य भत्ते का भुगतान न करने के मामले में भी राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग को कड़ी फटकार लगाई थी। उसका कहना था कि प्रशिक्षु चिकित्सक सोलह से बीस घंटे काम कर रहे हैं और उन्हें भत्ते का भुगतान न होने पर आयोग की ओर से अब तक संज्ञान क्यों नहीं लिया गया? मगर, सवाल है कि क्या चुनिंदा मामलों में न्यायपालिका के फैसलों से सरकारी कामकाज में निष्पक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित हो पाएगी? जाहिर है कि जब तक शासन के स्तर पर इस मामले में दृढ़ इच्छाशक्ति का अभाव रहेगा, तब तक व्यापक सुधार की उम्मीद धुंधली ही रहेगी।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

दूसरी श्वेत क्रांति

भारत में श्वेत क्रांति के नेता वर्गीज कुरियन को बहुत याद किया जाता है। उन्होंने 1960-70 के दशक में देश में श्वेत क्रांति को मुकाम पर पहुंचाया था और भारत में दूध की कमी को दूर करने में मदद की थी। दूध और दूध से बने उत्पाद पौष्टिक आहार के लिए बहुत जरूरी हैं, खासकर बच्चों के लिए। निम्न-गुणवत्ता वाले आहार के &ल्लु२स्र;बच्चों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर होते हैं और ये प्रतिकूल प्रभाव उनके वयस्क होने तक रह सकते हैं। परिवार का आकार भोजन पर खर्च को प्रभावित करता है, विशेष रूप से प्रोटीन युक्त भोजन, जैसे दूध, जो अपेक्षाकृत महंगा है। इसके चलते बड़े परिवारों में पौष्टिक खाद्य पदार्थों पर प्रति व्यक्ति खर्च घट जाता है। वैसे, भारत में खाद्य पदार्थों पर प्रति व्यक्ति खर्च के मामले में परिवार का आकार कितना मायने रखता है, इस पर बहुत कम शोध हुआ है। यहां हम ग्रामीण व शहरी भारत में दो प्रकार के परिवारों के लिए दूध और दूध के उत्पादों पर होने वाले खर्च पर विचार करते हैं- एक बच्चे वाले तीन सदस्यीय परिवार और दो बच्चों वाले चार सदस्यीय परिवार। ध्यान रहे, हमारे अनुमान भारत के राष्ट्रीय घरेलू उपभोग सर्वेक्षण 2022-23 के आंकड़ों पर आधारित हैं। इस राष्ट्रीय सर्वेक्षण में एक बच्चे वाले तीन सदस्यीय 18,179 परिवार व दो बच्चे वाले चार सदस्यीय 28,650 परिवार हैं। हमने पाया कि एक बच्चे वाले परिवार ने 2022-23 में दूध पर प्रति व्यक्ति प्रतिमाह औसतन 443 रुपये खर्च किए, जबकि दो बच्चों वाले परिवार ने 376 रुपये खर्च किए। दूध पर औसत खर्च आम तौर पर उच्च आय वाले परिवारों में ज्यादा होता है, पर एक औसत आय वाले भारतीय परिवार में प्रति व्यक्ति दूध खर्च कम होता है। एक बच्चे वाला सामान्य परिवार दूध पर लगभग 329 रुपये और दो बच्चों वाला परिवार करीब 300 रुपये खर्च करता है। ज्यादातर परिवार शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य खाद्य पदार्थों को ज्यादा महत्व देते हैं, ऐसे में, दूध के बजट में कटौती हो जाती है। यहां चिंता इसलिए भी ज्यादा है कि गरीब परिवारों को पर्याप्त दूध नहीं मिल रहा है। गरीब परिवारों में बच्चों के बीच पोषण की कमी उनके स्वास्थ्य व शिक्षा नतीजों को प्रभावित कर रही है। ऐसे बच्चे, जब बड़े होते हैं, तब उनकी उत्पादकता तुलनात्मक रूप से कम होती है, जिससे देश में सामाजिक असमानता भी बढ़ती है। उत्तर भारत के अपेक्षाकृत गरीब राज्यों में ऐसी बड़ी आबादी है, जो दूध से वंचित है। अगर हम एक औसत भारतीय घर की बात करें, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2019-21 के आंकड़ों के अनुसार, 6 महीने से 2 साल की उम्र के बीच के 58 प्रतिशत बच्चों के माता-पिता ने बताया है कि उनके यहां दूध की खपत नहीं है, मतलब उन्हें दूध नहीं मिल रहा है। यहां ध्यान रहे कि बच्चों में अब लैक्टोज असहिष्णुता के मामले भी बहुत हैं। फिर भी यह बात स्पष्ट है कि गरीब परिवारों के बच्चों तक दूध नहीं पहुंच पा रहा है। वैसे तो, कोई भी सरकारी नीति परिवार के आकार के आधार पर हस्तक्षेप नहीं कर सकती, पर पोषण संबंधी कमियों को दूर करने और बच्चों की सेहत में सुधार के लिए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से दूध की खपत बढ़ाने की कोशिश जरूर की जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड का गिफ्ट मिल्क कार्यक्रम, विटामिन ए और डी से भरपूर 200 मिलीलीटर सुगंधित दूध प्रदान करता है।

आज महकगे जिनालय सुगंध दशमी पर्व आज

श्रद्धालुओं ने अभिषेक शांतिधारा, उत्तम सत्य धर्म की पूजा की, भजन प्रतियोगिता में बच्चों ने उत्साह के साथ प्रस्तुतियां पेश की

टोंक. शाबाश इंडिया। दशलक्षण महापर्व के तहत आज शुक्रवार को श्री दिगंबर जैन नसिया एवं बड़ा तख्ता जैन मंदिर सहित जिला मुख्यालय पर सुगम दशमी पर्व मनाया जाएगा जिसमें सायकालीन बेला में बालाचार्य निपूर्णनंदी जी महाराज के सानिध्य में जैन नसिया से बैंडबाजे के साथ से आदर्शनगर,बड़ा तख्ता जैन मंदिर,काफला बाजार चेत्तालय जिनालय मे धूप खेपन का कार्यक्रम आयोजित होगा जिससे सभी जिनालय महक उठेगे। समाज के अध्यक्ष भागचंद फुलेता ने बताया की पर्यूषण महापर्व के पांचवे दिन श्रद्धालुओं ने प्रातःकाल बेला में श्रीजी के समक्ष अभिषेक, शांतिधारा के बाद आचार्य विद्यासागर, वर्धमान सागर, विरागसागर,वैराग्यनंदी जी एवं

मुनिराज,आर्यिका के अर्घ्य समर्पित किए गए तत्पश्चात उत्तम सत्यधर्म की पूजा के साथ सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरू, देव शास्त्र गुरु, आदिनाथ भगवान, शांतिनाथ भगवान की पूजा की गई ।इस मौके पर कमल आड़रा,पप्पू नमक,मनीष अत्तार,पुनीत जागीरदार,आकाश बोरदा,टोनी आडरा नरेंद्र अत्तार,गोलू छामुनिया,आदि समाज के लोग बड़ा तख्ता जैन मंदिर में उपस्थित थे।बालाचार्य निपूर्णनंदी जी महाराज ने उत्तम सत्य धर्म के बारे में अवगत कराया कि कलयुग हो या सतयुग सत्य के बिना उन्नति कभी नहीं हो सकती जो व्यक्ति सत्य नहीं बोलता उसका कभी सम्मान नहीं होता उसके ऊपर कोई विश्वास नहीं करता है। कठिन वचन नहीं बोलना चाहिए बुराई तथा झूठ इन दोनों का भी सर्वथा त्याग कर देना चाहिए और सत्य वचन ,हित- मित-प्रिय वचन को ही बोलना चाहिए मुनिराज और श्रावक की प्रतिष्ठा भी सत्य धर्म से ही होती है। सायकालीन बेला में आरती प्रशन मंच के पश्चात मनोज जी शास्त्री द्वारा शास्त्र सभा, भजन प्रतियोगिता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें एक से बढ़कर एक प्रस्तुत की गई बाद इस मौके पर महावीर पासरोटियां महावीर दाखिया, डॉक्टर चेतन जैन, ओम ककोड़, रिंकू बोरदा, मनीष फागी, अभिषेक बनेठा, राजेश शिवाड़, अंकुर पाटनी, अनिल सर्राफ,और मंच का संचालन विकास अत्तार ने किया।

भगवान शांतिनाथ जी का चमत्कार पवन वेग से चारों तरफ फैल गया

गुन्सी, निवाई. शाबाश इंडिया। परम पूज्य भारत गौरव गणिनी आर्यिका 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ सान्निध्य में श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी राजस्थान में दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन हुआ। प्रतिक जैन सेठी ने बताया कि उत्तम सत्य धर्म के दिन मंडल पर 16 अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव के साथ पूजा रचायी गई। भगवान का चमत्कार पवन वेग की तरह चारों तरफ फैल गया। दूर-दूर से यात्रीगण आकर भगवान की भक्ति आराधना में तल्लीन हो गए।इंद्रा जैन बरोदिया के द्वारा भक्तामर दीपार्चना का अनुष्ठान संपन्न हुआ। प्रतिक जैन सेठी ने बताया कि जिसमें निवाई समाज महिला मंडल सम्मिलित था। आज पूज्य गुरु मां की आहार चर्या व्रती आश्रम के व्रतीयों द्वारा निर्विघ्न सम्पन्न करायी गई। माताजी ने प्रवचन के द्वारा उत्तम सत्य धर्म के बारे में भक्तों को समझाते हुए कहां कि सत्य जीवन का एक अनमोल हिस्सा है। जो भी इसे धारण करता है वह जीवन में सुख शांति को ही पा जाता है। आज वर्तमान पीढ़ी नए-नए संसाधनों के कारण न जाने कितनी झूठ का सहारा लेकर अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। वर्तमान में सत्य का अकाल पड़ चुका है। हर किसी के मुंह पर झूठ के अलावा और कुछ नहीं मिलता। सत्य की तलाश को छोड़कर झूठ का सहारा आज व्यक्ति ले रहा है।

जनकपुरी में उत्तम शौच धर्म के दिन 48 दीप से भक्तामर दीप अर्चना का हुआ भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनकपुरी ज्योतिनगर जैन मंदिर में गुरुवार को दस लक्षण महापर्व महोत्सव में सत्य धर्म की पूजा भक्ति भाव के साथ हुई। प्रातः विधान मण्डल पाण्डुशीला पर शान्तिधारा करने का सोभाग्य पदम पारस आदित जैन बिलाला परिवार को व पवन महेंद्र संजय कासलीवाल परिवार को तथा वेदी पर डा. इंद्र कुमार जैन को मिला। इसके बाद नित्य पूजन व सत्य धर्म विधान पूजन शिखर चन्द किरण जैन द्वारा साज बाज के साथ कराते हुए कठोर वचन , पर निंदा और झूठ को त्याग कर सत्य धर्म पालन करने के बारे में समझाया गया। विधान पूजन के बाद सत्य धर्म के 108 जाप्य स्वाहा स्वाहा बोलते हुए किये गये। प्रबन्ध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि इधर दिन में तत्वार्थ सूत्र की क्लास में पाँचवे अध्याय में अजीव तत्व के बारे में स्वाध्याय प्रेमियों ने अध्ययन किया तथा शाम को आरती के पश्चात श्री आदिनाथ चैत्यालय ज्योति नगर में बुधवार को 48 दीपक से भक्तामर दीप अर्चना का भजनों के साथ सुंदर आयोजन किया गया ।

दसलक्षण महापर्व के पांचवे दिन उत्तम सत्य धर्म की पूजा हुई, अभिषेक शांतिधारा हुई

आज शुक्रवार को सुगंध दशमी पर्व मनाया जाएगा

सुजानगढ़. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के सबसे बड़े पर्व दसलक्षण महापर्व के पांचवे दिन भाद्रपद शुक्ल नवमी वार गुरुवार को श्री दिगम्बर जैन मंदिर में जिनेन्द्र भगवान की शांतिधारा पारसमल सरोज कुमार सुरेश कुमार नरेश कुमार पांड्या व सुगंधित शांति करने का सौभाग्य भंवरलाल मक्खनलाल राहुल कुमार सेठी परिवार को मिला।इसके पश्चात नए हॉल में नित्य पूजा पाठ व दस धर्मो की पूजा खूब भक्तिभाव पूर्वक हुई। मंत्री पारसमल बगड़ा ने उत्तम सत्य धर्म पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि उत्तम सत्य का तात्पर्य है सत्य का पालन करना। जिसकी वाणी व जीवन में सत्य धर्म अवतरित हो जाता है, उसकी संसार सागर से मुक्ति निश्चित है। समाज के अध्यक्ष सुनील जैन सडू वाला ने दसलक्षण महापर्व की विशेषता बताते हुए कहा कि यह पर्व हमें स्मृति दिलाता है कि हम केवल शरीर तक ही सीमित नहीं रहें बल्कि आत्मा के बारे में भी आत्म चिंतन करें ; आत्मा का संबोध प्राप्त करें और आत्मा तक पहूंचने का प्रयत्न करें। यह जागरण की बेला है। अतः अप्रमत बनकर तीर्थंकरों की वाणी का श्रवण कर शरीर की पुष्टता के साथ आत्मा को भी पुष्ट बनाएं। मीडिया प्रभारी महावीर प्रसाद पाटनी ने बताया कि संध्याकालीन महाआरती के पश्चात नित्य अलग अलग प्रकार की धार्मिक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। कल दशमी के दिन सुगंध दशमी पर्व मनाया जाएगा।

दसलक्षण महापर्व, 13, सितम्बर, छटवां दिन विशेष

उत्तम संयम : संयम के बिना हमारा जीवन बिना ब्रेक की कार की तरह

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

आज दशलक्षण धर्म का छटवाँ दिन है- उत्तम संयम धर्म। संयम का शाब्दिक अर्थ सम् + यम = संयम अर्थात् सम्यक रूप से यम अर्थात् नियंत्रण करना संयम है। घोड़े को यदि लगाम न लगी हो तो घोड़ा बेकाबू होकर अपने सवार को किसी खड्डे में गिरा देता है, इसी तरह इन्द्रियों पर आत्मा यदि अँकुश न लगावे तो इन्दियाँ भी आत्मा को दुर्गति में डाल देती हैं। इस कारण अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण लगाकर इन्द्रियों को अपने वश में रखना आवश्यक है। हम कह सकते हैं जैसे बिना ब्रेक के गाड़ी बेकार है ठीक उसी प्रकार बिना संयम के अमूल्य मनुष्य भव बेकार है। इसीलिये आगम में संयम का पालन मुनिराज और श्रावक दोनों के लिये वर्णित है। संयम ही जीवन का श्रृंगार है। मनुष्य संयम धारण कर सकता है, इसलिए समस्त जीवों में वह श्रेष्ठ है। जीवन रूपी नदी के लिए संयम धर्म का पालन करना जरूरी है। संयम को हम बंधन कह सकते हैं। लेकिन यह बंधन सांसारिक प्राणी के लिए दुखदाई नहीं वरन दुखों से छुटकारा दिलाने वाला है। नदी बहती है पर तटों का होना जरूरी है। इसी प्रकार संयमी जीवन ही अपने अनंत सुखों को प्राप्त कर सकता है। संयम को धारण करने का हमें पूर्ण अधिकार मिला है लेकिन सांसारिक प्राणी पंचेन्द्रिय विषय के वशीभूत होकर इससे दूर भागते हैं। जिससे वह जीवन रूपी गाड़ी में सफल नहीं हो पाते हैं। संयम एक प्रकार का आत्मानुशासन है। लोग दूसरों पर शासन करना चाहते हैं ,लेकिन खुद अनुशासित नहीं हो पाते हैं। अच्छा शासन भी वही कर सकता है जो निज पर शासन करना जनता हो । हमें ईमानदारी से विचार करना है कि हम इन्द्रियों के दास हैं या इन्द्रियां हमारी दास हैं? प्राणी और इन्द्रीय संयम के भेद से यह दो प्रकार का है। प्राणियों की रक्षा करना प्राणी संयम है। जबकि पंचेन्द्रिय विषयों से विरक्ति और मन की आकांक्षाओं पर नियंत्रण इन्द्रीय संयम है।

1- इन्द्रिय संयम: स्पर्शन, रसना , घ्राण , चक्षु और कर्ण इन पाँचों इन्द्रियों के 27 विषयों (स्पर्शन के 8, रसना के 5, घ्राण के 2 ,चक्षु के 5 , और कर्ण के 7) में प्रवर्तन पर नियंत्रण रखना इन्द्रिय संयम है। क्योंकि पंचइन्द्रियों के विषयों का सेवन हम सुख की वांछा से करते हैं , पर विचार करें कि क्या हमें उनके सेवन से सुख मिलता है ? नहीं ! भ्रम से सुख का आभाष मात्र होता है , वो भी कुछ ही क्षणों के लिये। वास्तव में विषयों का सुख किंपाक फल के समान है , जो जीभ पर रखने पर तो मीठा लगता है , पर बाद में घोर दुख , महादाह , और संताप देकर मरण को प्राप्त कराता है , ठीक उसी प्रकार ये पंचेन्द्रिय के विषय जीव को बहुत आकर्षित करते है, लुभावने और मनमोहक लगते हैं , पर इनके फल में जीव अनंतकाल तक नरकों के घोर दुखों को सहन करता है।

2- प्राणी संयम: निगोदिया जीव से लेकर पंचेन्द्रिय तक के समस्त जीवों की रक्षा करना प्राणी संयम है। जिस प्रकार अपनी आत्मा है उसी प्रकार अन्य जीवों के भी आत्मा है, जिस तरह हमको शारीरिक दुख होता है उसी प्रकार अन्य जीवों को भी शरीर की पीड़ा होती है। एकेन्द्रिय जीव पृथ्वी, पर्वत आदि पृथ्वीकायिक जीव, पानी ओला, ओस आदि जलकायिक जीव; आग, दीपक, बिजली आदि अग्निकायिक जीव; हवा, आंधी, यदि वायुकायिक जीव; वृक्ष, वेल, घास, झाड़ी, पौधे, फल-फूल, पत्ते आदि वनस्पतिकायिक जीव एकेन्द्रिय होते हैं। वे बोल नहीं सकते परंतु उनको भी दुख तो होता ही है। डॉ. जगदीशचन्द्र वसु प्रयोग करके बतलाते थे कि किसी पेड़ में यदि कील आदि नुकीली चीज चुभाई जाय तो वह पीड़ा से कांपता है। इस कारण बिना किसी प्रयोजन के न पृथ्वी, पहाड़ खोदना चाहिए, न पानी बिखेरना चाहिए न आग जलानी चाहिए न हवा करनी चाहिए और न फूल, पते, घास, डाली आदि तोड़नी चाहिए। लट, केंचुआ, जोंक आदि दो इन्द्रिय जीव हैं। चींटी, खटमल, जूं आदि कीड़े मकोड़े तीन इन्द्रिय जीव हैं। मक्खी, मच्छर, भौंरा, पतंगा आदि चार इन्द्रिय जीव होते हैं और पशु पक्षी, मनुष्य आदि पँचेन्द्रिय जीव हैं इन सब को त्रसकाय कहते हैं। इस सब जीवों को रक्षा भी उसी तरह करनी चाहिये जिस तरह कि अपने प्राणों की रक्षा की जाती है। इसको ही प्राणी-संयम कहते हैं। हम अपने क्षुद्र स्वार्थों को पूरा करने के लिये न जाने कितने जीवों की हिंसा प्रतिदिन करते हैं। जैसे अभक्ष्य भक्षण , रात्रि भोजन , सौन्दर्य के सामान आदि के लिये हम अनंत जीवों की हिंसा करते हैं। यदि हम चाहे तो इन इच्छाओं पर नियंत्रण करके आंशिक रूप से ही सही जीव दया का पालन कर संयम की रक्षा कर सकते हैं। जो एक सच्चे श्रावक को करना ही चाहिये। संयम के बिना हमारा जीवन बिना ब्रेक की कार की तरह है । कार में ब्रेक हो तो कार अन्यथा बेकार । उसी प्रकार जिसके जीवन में जरा सा भी संयम नहीं है उसका जीवन भी बेकार । सभी जन्मों में मनुष्य जन्म ही ऐसा जन्म है जिसमें संयम धारण करने की सामर्थ्य है इसलिए हमें मनुष्य भव का उपयोग संयम धारण कर के कर लेना चाहिए। मानव आज दिन प्रतिदिन मयार्दायें तोड़ता जा रहा है। खानपान की मयार्दायें टूट रही हैं। अभक्ष्य, अस्पृश्य और मादक पदार्थ तक भोजन में सम्मिलित होने लगे हैं। तामसिक और चटपटी मसालेदार वस्तुयें ज्यादा रुचिकर लगती हैं । जो असंयम की पोषक, रागवर्धक तो होती ही हैं स्वास्थ्य के लिये हानिकारक भी होती हैं । तरह - तरह के पान मसाले, गुटखा, तम्बाखू आदि के दुष्परिणाम विभिन्न रोग (यहां तक कि केंसर आदि) के रूप में भी देखने में आ रहे हैं। अधिकांश सौंदर्य प्रसाधन की सामग्री हिंसात्मक तरीके से तैयार होती है ऐसे इन काम भोगों का परिणाम समझते हुए हमें संयम अपनाने की प्रेरणा लेनी चाहिए।

जो इंद्रिय पर विजय प्राप्त कर लेता है, वह निर्वाण प्राप्त कर सकता है। हम अपने ये काम भोग क्षण भर सुख और चिरकाल तक दु : ख देने वाले हैं , बहुत दु : ख और थोड़ा सुख देने वाले हैं ,संसार से मुक्ति होने के विरोधी और अनर्थों की खान हैं । जाप्य : ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्माङ्गाय नमः।

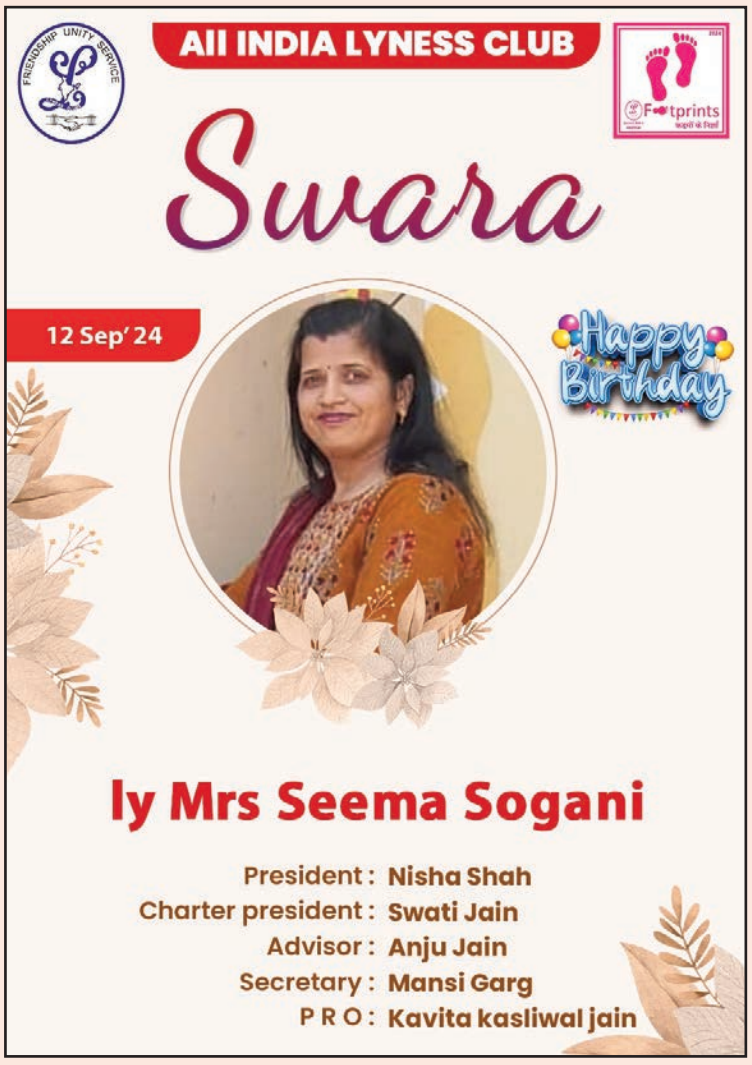

14 सितंबर को विशाल जैन संगीतमय हाऊजी एवं सम्मान समारोह होगा आयोजित

जैन रत्न विशिष्ट से महेश काला व जैन युवा रत्न से प्रमोद पहाड़िया होंगे सम्मानित

जयपुर. शाबाश इंडिया

सामूहिक जिनेंद्र आराधना संस्था और जैन सोशल ग्रुप जयपुर गोल्ड की ओर से राजस्थान की सबसे विशाल हाऊजी एवम् सम्मान समारोह का आयोजन आने वाले शनिवार 14 सितंबर 2024 को रात 7.15 बजे से मनिहारो का रास्ता स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर बड़ा दीवान जी के बड़े परिसर में किया जाएगा। इस आयोजन में फरमाइश की जैन संगीतमय हाऊजी पर राकेश गोधा और उनकी टीम भक्ति नृत्य के सुरम्य वातावरण में हाऊजी को संचालित करेगी। 200 से भी अधिक पुरस्कार दीजिए जायेंगे। समन्वयक धीरज पाटनी, संजय काला, सुरेंद्र पाटनी राजकुमार बेद और मनीष चांदवाड़ ने बताया कि इस अवसर पर उपस्थित श्रावको के समक्ष बड़े ही आदर और ऊर्जा से ''जैन रत्न विशिष्ट'' का सम्मान पत्र वरिष्ठ समाजसेवी महेश काला को और ''जैन युवा रत्न'' का सम्मान पत्र युवा समाजसेवी प्रमोद जैन पहाड़िया को प्रदत किया जाएगा। दोनो ही व्यक्तित्व विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से धार्मिक,सामाजिक और शैक्षणिक तथा मानव सेवार्थ गतिविधियों में बेहद सक्रियता से सेवारत है और दोनो के व्यक्तित्व और कार्यशैली अनुकरणीय है।

अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज के प्रवचन से...

कुलचाराम, हैदराबाद । पर्वों के पर्वराज का पांचवा चरण - उत्तम सत्य, सत्य नहीं होता परिभाषित - रहता मात्र अनुभव गम्य..! तुम - तुम्हारी उम्र से नौ महिने बड़े हो, यह बात सिर्फ एक ही शख्स जानता है। सत्य को शब्दों का जामा नहीं पहनाया जा सकता है क्योंकि जो नग्न है वही सत्य है। जैसे - धरती नग्न है, आकाश नग्न है, चांद तारे, पेड़, पौधे, सागर, सरिता, पशु, पक्षी, जानवर भी नग्न है,, इसलिए दिगम्बर जैन सन्त भी नग्न है। नग्नता प्रकृति प्रदत्त उपहार है जिसे हम नकार नहीं सकते। उत्तम सत्य धर्म कहता है - दिखावे का जीवन बहुत जी लिया, अब यथार्थ के जीवन से जुड़ें और सत्य का जीवन जीयें। अभी हम आकाश में जीते हैं, कल्पनाओं में उड़ते हैं, इसलिए सत्य के दर्शन से वंचित रह जाते हैं। अभी हम पृथ्वी पर रहते हैं, और आकाश की बातें करते हैं। जिस पृथ्वी पर रहना है, जीना है, चलना है, मरना है, और भी बहुत कुछ करना है, हम उस पृथ्वी की बात नहीं करते। हम आकाश की बातें करके अपने मैं को पुष्ट करते हैं,, इसलिए सत्य से दूर हो जाते हैं। सत्य एक है, असत्य अनन्त है। धर्म सत्य है, अग्नि सत्य है, मृत्यु सत्य है। जो सत्य तुम्हें बांध ले, वह सत्य नहीं सम्प्रदाय है। सम्प्रदाय बांधता है, सत्य - मुक्त करता है। सत्य मुक्ति प्रदाता है, सत्य से बढ़ कर दूसरा कोई मुक्ति दाता नहीं है। सत्य ही शिव है, सत्य ही सुन्दर है, सत्य ही परमात्मा है। उत्तम सत्य का अर्थ है मौन हो जाना। मोबाइल आने के बाद आदमी झूठ बोलने में मास्टर माइण्ड बन गया है। मोबाइल रखने का अर्थ है झूठ बोलने का लाइसेंस। **-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद।**

जैन मिलन राघौगढ़ द्वारा 25वां प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया

राघौगढ़. शाबाश इंडिया

जैन समाज के दस लक्षण पर्व के पावन अवसर पर जैन मिलन राघौगढ़ द्वारा जैन समाज के प्रतिभावान छात्रों का छात्राओं का सम्मान समारोह आयोजित किया। समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष विजय कुमार जैन, विशेष अतिथि पंडित संजय शास्त्री बजरंगगढ़ गुना, भारतीय जैन मिलन के क्षेत्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं जैन समाज राघौगढ़ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अशोक भारिल्य, सिंघई ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉक्टर लेसांशु जैन थे। अध्यक्षता जैन मिलन राघौगढ़ के अध्यक्ष जितेंद्र कुमार जैन ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ संगीत में मंगलाचरण से हुआ। मुख्य अतिथि विजय कुमार जैन ने अपने संबोधन में जानकारी दी राघौगढ़ में सन 1990 में सेवानिवृत शिक्षक सिंघई नेमीचंद जैन ने पारमार्थिक ट्रस्ट का गठन किया। इस ट्रस्ट के माध्यम से विशेष रूप से विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में योगदान किया जाता है यह प्रतिभा सम्मान समारोह सिंघई नेमीचंद जैन परमार्थिक ट्रस्ट के सहयोग से स्वर्गीय डॉक्टर विनोद कुमार जैन की पुण्य स्मृति में आयोजित किया गया है। शाखा मंत्री विकास कुमार जैन ने जैन मिलन राघौगढ़ की गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया जैन मिलन राघौगढ़ द्वारा इस वर्ष दो वाटर कूलर श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर एवं संत सुधा सागर धाम पर आम जनता को शीतल जल उपलब्ध कराने लगाए गए हैं। जुलाई माह में संत सुधा सागर धाम पर पर्यावरण की सुरक्षा हेतु वृक्षारोपण किया गया। बरसात के मौसम में पक्षियों को आहार के लिए धन राशि एकत्रित कर जुलाई एवं अगस्त माह में मंदिर की छत पर पक्षियों को दाना डाला गया।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

इन्द्रिय विजय में सर्व विजय

संयमनं संयम। संयमन को ''संयम'' कहते हैं । संयम पद में दो शब्द हैं, एक सम दूसरा यम। 'सम' शब्द का अर्थ है- सम्यक प्रकार से पाप क्रियाओं से यम शब्द का अर्थ है- विरक्त होना,दमन करना या कहें दबाना, संयम है। बात आती है कि किसका दमन करना? पाप क्रिया-अशुभ मन, वचन, काय, को पाप क्रिया कहा है। वह सब ओर से पाप आश्रव का कारण है उसका रुकना संयम कहलाता है। पांच महाव्रत, पांच समिति,तीन गुप्ति, इन तेरह प्रकार के चारित्र में हमेशा पूर्ण प्रयत्न करना संयम कहलाता है अथवा प्राणी हिंसा और इन्द्रीय विषयों में अशुभ प्रवृत्ति का रुकना संयम कहलाता है। चार कषाय हैं - क्रोध,मान, माया,लोभ का, आकुलता -व्याकुलता का ।जो कि विषय भोगों के दृढ़ संस्कार वश या कर्तव्य विहीनता वश प्रतिक्षण नवीन रूप धारण करके हमारे अंतकरण में प्रवेश पाते रहते हैं उनको सम्यक प्रकार दवा देना, शमन करना संयम कहलाता है। कविवर श्री दौलत राम जी कहते हैं- ''आतम को हित है सुख सो सुख,आकुलता विन कहिए । आकुलता शिव माहिं न तातें, शिव मग लाग्यो चहिए।'' आत्मा के हित में सुख हैं ,आनंद है जो बिना आकुलता के है। आकुलता शिवपुरी का धाम नहीं है। आकुलता आत्मा में नहीं है। क्योंकि वह इस स्वभाव से रहित है। इसलिए मोक्ष मार्ग में लगना चाहिए। और मोक्ष मार्ग हमारा कब प्रशस्त होगा जब हम संयम धारण करेंगे। कैसा संयम तो आचार्यों ने कहा, सम्यक दर्शन सहित अर्थात अनादि अनंत अहेतुक ज्ञान स्वभाव मय। अपनी ही आत्मा की दृष्टि रखकर यह मैं हूं ऐसी अटल श्रद्धा रखकर इस वीतराग ज्ञान मय भाव में स्थिर हो सो उत्तम संयम है। यह उत्तम संयम धर्म आत्मा का स्वभाव है। यह धर्म देह की पृवृत्ति में नहीं है। किसी क्षेत्र में नहीं है। किसी काल में नहीं है। किसी पर पदार्थ में नहीं है। मेरा यह धर्म अरिहंत देव में नहीं है। यह मेरे आत्मा देश के सिवाय किसी अन्य देश में नहीं है। मुझ में ही है ।किसी पर पदार्थ में नहीं है। मेरे ही भाव में है किसी पर के भाव में नहीं है। यह धर्म कहीं से आना जाना नहीं है। अपने से विभाव भाव हटा दो वस यह धर्म अपनी आत्मा मे रह जाएगा। ऐसे धर्म को कैसे पाया जा सकता है किसको लक्ष्य बनाकर? यदि कोई व्यक्ति समझे कि- अरिहंत भगवान की पूजा करके इस धर्म को पा लूंगा ,अरे भई! यह पूजा भी तो इसलिए है कि अरिहंत देव का लक्ष्य करके अपने आत्म देव का लक्ष्य हो जाए, धर्म जब भी प्रगट होगा अपने आप में शुद्ध ज्ञान के विकास को लेकर होगा। धर्म के प्रकट होने का और कोई जरिया नहीं है। उत्तम भावों की प्राप्ति से ही उत्तम संयम मिलेगा । जिनके प्राणियों पर दया होती है ,वह प्राणी लौकिक संयम धर्म की रक्षा करते हैं। किंतु जिन की अपनी आत्मा पर दया होती है और विषय कषायों आदि से विमुखता है, वे अपनी आत्म रूप संयम धर्म की रक्षा करते हैं। कर्मों की निर्जरा करते हैं। कर्मों की निर्जरा दुःख से नहीं होती, काय क्लेश से नहीं होती। इस संदर्भ में पूज्यपाद स्वामी ने कहा,

आनन्दोनिर्दहत्युद्धं कर्मेन्धन मनारतं।
न चासौ खिध्यते योगी,बहिर्दुःखेष्वचेतनः।।

अर्थात कर्म की निर्जरा दुःख से नहीं होती, काय क्लेश से नहीं होती, आत्मा का निजानंद जब प्रगट होता है तब कर्म की निर्जरा होती है। परिणामों में निर्मलता आती है, उसे काय क्लेश का भाव ही नहीं होता। उस परिणाम की निर्मलता से परमानंद रूप रहे ऐसे आत्मीय आनंद से कर्म की निर्जरा होती है। काय क्लेश नाम तो रागियों के वोट से रखा गया है। कहने का तात्पर्य है जब आत्म आनंद की चाहा होती है तब व्यक्ति संयम की ओर बढ़ता है। सबसे बड़ा संयम अपने आप पर नियंत्रण करना है। अपने आप पर नियंत्रण किए बिना संयम नहीं होता और आत्म संयम के बिना मुक्त नहीं हो सकते। किसी विद्वान ने कहा, **"NO MAN IS FREE WHO IS NOT MASTER OF HIMSELF."** कोई भी आदमी मुक्त नहीं है जो अपने आप का स्वामी नहीं है अर्थात जिसने विकार भावों को नहीं जीता है,गुण रत्नों का स्वामी नहीं बना है वह आत्म संयम नहीं पाल सकता।

संयमं द्विविधं रोके,कथितं मुनिपुगंवेः।
पालनीयं पुनश्चित्ते, भव्य जीवेन सर्वदा।।

गणधर देवों ने लोक में संयम दो प्रकार का कहा है। उसका भव्य जीवों को हृदय से पालन करना चाहिए। प्रथम इन्द्रिय संयम और दूसरा है प्राणी संयम। इन्द्रीय संयम- स्पर्शन, रसना घृण, नेत्र, कर्ण और मन पर नियंत्रण करना इन्द्रिय संयम है। प्राणी संयम - पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक ,वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवों की रक्षा करना प्राणी संयम है। इन दोनों संयम में इन्द्रीय संयम मुख्य है क्योंकि इन्द्रिय संयम प्राणी संयम का कारण है। इन्द्रीय संयम होने पर ही प्राणी संयम होता है। बिना इंद्रिय संयम के प्राणी संयम नहीं हो सकता। इन्द्रीय संयम का अर्थ है -पांचों इंद्रियों के विषयों में मन को न जाने देना और प्राणी संयम का अर्थ है- हिंसात्मक प्रवृत्ति से दूर रहना, मन को नियंत्रित करना क्योंकि सबसे अधिक हिंसा मन के द्वारा ही होती है । मन में तरह-तरह के दुविचार आते हैं ।उसके बाद बचनों से हिंसा होती है और सबसे कम हिंसा काय से होती है। इंद्रिय का निरोध करना ही संयम है।

दृष्टांत- एक दिन बादशाह हुमायूं ,बहराम खां से किसी विषय पर विचार विमर्श कर रहे थे। उस समय बहराम खां की आंखें झुकी हुई थी बादशाह ने पूछा क्या आप नींद ले रहे हैं? इस पर बहराम खां ने कहा हुजूर! बड़े- बूढ़ों का कहना है कि तीन अवसरों पर मनुष्य को अलग-अलग तीन प्रकार का संयम रखना चाहिए।

1- साधुओं के साथ बात करते समय 'मन' का संयम रखना जरुरी है।

2- बादशाह से बातचीत करते समय आंखों का संयम आवश्यक है।

3- आम लोगों के बीच बोलते समय बाणी का संयम रखना जरुरी है। आंखों का संयम रखने के लिए मेरी पलकें झुकी हुई हैं।

इस उत्तर से बादशाह बहुत खुश हुए वास्तव में जो संयमी है, वही सच्चा मनुष्य है। इसलिए संयम धारण करना अत्यंत आवश्यक है।

संयम की विराधना में, मानव धिक्कार र पाता है,
संयम की उपासना में, मन का विकार जाता है।
साधना का मार्ग कठोरतम होते हुए भी,
संयम की साधना से जीवन में निखार आता है।।

''उत्तम सत्य धर्म की जय।''

अ. रा. समाज रत्न डॉक्टर अल्पना जैन
मालेगांव, नाशिक महाराष्ट्र

ताजगंज जैन मंदिर में मनाया भगवान पुष्पदन्तनाथ का निर्वाण कल्याणक महोत्सव

आगरा. शाबाश इंडिया

सकल दिगंबर जैन समाज ताजगंज के तत्वावधान में दशलक्षण महापर्व के चौथे दिन 11 सितंबर को उत्तम शौच धर्म एवं श्री पुष्पदंतनाथ भगवान का निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया गयोमहापर्व के चौथे दिन भक्तों ने भगवान पारसनाथ का अभिषेक एवं शांतिधारा की पंडित सिद्धम जैन शास्त्री के कुशल निर्देशन में मंत्रोच्चारण के साथ अर्घ्य अर्पित कर उत्तम शौच धर्म का पूजन कियो पूजन के मध्य में 31 परिवारों एवं भक्तों द्वारा निर्वाण काण्ड का वाचनकर पुष्पदन्तनाथ भगवान के समक्ष निर्वाण लाडू अर्पित कियो विधानाचार्य सिद्धम जैन शास्त्री ने उत्तम शौच धर्म के महत्व को बताते हुए कहा कि सामाजिक और व्यवहारिक रूप से शरीर की शुद्धि का महत्व है,लेकिन केवल तन की शुद्धि से कुछ नहीं होगा,मन की शुद्धि भी होनी चाहिए उसे उत्तम शौच धर्म कहते हैंइस अवसर पर संजय जैन, संजयबाबू जैन,उत्सव जैन,मधुर जैन, विजय जैन,मीरा जैन,ऋतु जैन,स्वाति जैन,अनुराधा जैन,मिनी जैन,पूनम जैन,रेशी जैन समस्त ताजगंज जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहे। **रिपोर्ट शुभम जैन**

सत्य के समान तप नहीं, झूठ से बड़ा पाप नहीं: मुनि श्री सुज्ञेयसागर महाराज

सुपार्श्वनाथ पार्क में दशलक्षण पर्व के पांचवे दिन उत्तम सत्य धर्म की आराधना

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। आचार्य श्री सुंदरसागरजी महाराज ससंघ के सानिध्य में श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के तत्वावधान में दसलक्षण (पर्युषण) महापर्व की आराधना शहर के शास्त्रीनगर हाउसिंग बोर्ड स्थित सुपार्श्वनाथ पार्क में पांचवे दिन गुरूवार को भी श्रद्धा व भक्तिभावना के साथ जारी रही। दशलक्षण महापर्व के पांचवे दिन उत्तम सत्य धर्म की आराधना की गई। प्रवचन में मुनि सुज्ञयसागर महाराज ने कहा कि सत्य के समान कोई तप नहीं है एवं झूठ के समान कोई पाप नहीं है। जिसके ह्दय में सच्चाई होती है उसके ह्दय में परमात्मा निवास करते है। उत्तम सत्य अहिंसा रूप दया धर्म का कारण है ओर दोषों का निवारक है। यह इस भव में ओर परभव में सुख का कारक है। यह सत्य वाणी की श्रेष्ठता है ओर अनुभूति का विषय है। उन्होंने कहा कि जीवन में जब भी बोलो तौलकर बोलो, जब भी बोलो प्रिय ओर आगमानुकुल बोलों। जब भी बोलो सत्य बोलो। वाणी का सदुपयोग करना ही उत्तम सत्य है। सभी के लिए हित, मित ओर प्रिय वचन बोलना ही उत्तम सत्य है। सत्य का सही स्वरूप प्रयोग करे तो सत्य द्वारा ही निराकुलता, शांति आनंद मिल सकता है। श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के अध्यक्ष राकेश पाटनी ने बताया कि दशलक्षण पर्व के पांचवे दिन सुपार्श्वनाथ मंदिर में मुख्य शांतिधारा व आरती का सौभाग्य श्रीमती मिश्रीदेवी, विमलकुमार, अशोककुमार, जयकुमार, प्रदीप, संजय, अंकुर छाबड़ा परिवार ने लिया। सौधर्मेन्द्र का इन्द्र व आरती का सौभाग्य मिश्रीदेवी, अशोक, सुशीला, अर्पित, चेतना, अंकित, ज्योति, नित्यान, अधीरा छाबड़ा परिवार को प्राप्त हुआ। मीडिया प्रभारी भागचंद पाटनी ने बताया कि आचार्य सुंदरसागर महाराज ससंघ के सानिध्य में उत्तम सत्य धर्म की श्रावक-श्राविकाओं द्वारा पूजा अर्चना मय भक्ति संगीत के साथ हुई। पूजा के पूर्व श्रीजी को जुलूस के साथ श्रद्धालुओं द्वारा पांडाल में ले जाया गया। दोपहर में सरस्वती पूजा, तत्वार्थ सूत्र पूजा एवं वाचन हुआ। शाम को त्रिशला महिला मण्डल के सौजन्य से त्यागी व्रतियों, तप त्याग उपवास करने वालों की अनुमोदना हेतु विनतियों का कार्यक्रम हुआ। सभी समाजजनों ने तप की बहुत-बहुत अनुमोदना की। सुगन्ध दशमी पर्व पर शुक्रवार को सामूहिक धूप क्षेपण कार्यक्रम दोपहर 2 बजे शास्त्रीनगर हाउसिंग बोर्ड स्थित सुपार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में होगा। दशलक्षण पर्व के छठे दिन उत्तम संयम धर्म की आराधना होगी। इस दौरान प्रतिदिन सुबह 5 बजे ध्यान, सुबह 6.15 बजे नित्य अभिषेक एवं शांतिधारा, सुबह 7.30 बजे से श्रीजी का पांडाल में आगमन, सुबह 7.45 बजे से संगीतमय पूजन एवं मंगल प्रवचन हो रहे है। आहारचर्या के बाद दोपहर 2 बजे से तत्वार्थसूत्र पूजन,सरस्वती पूजन व तत्वार्थ सूत्र वाचन किया जा रहा है। शाम 6 बजे से प्रतिक्रमण एवं सामायिक, शाम 7.15 बजे से श्रीजी की आरती एवं शाम 7.40 बजे से आचार्यश्री की भक्तिमय आरती की जा रही है।

उत्तम सत्य धम :जी सच बोलता है वह कभी दुखी नहीं होता

आगरा. शाबाश इंडिया

श्री शीतलनाथ दिगंबर जैन मंदिर गुदड़ी मंसूर खां में पर्यूषण महापर्व के पांचवें दिन गुरुवार को उत्तम सत्य धर्म के रूप में मनाया गया।महापर्व के पांचवें दिन भक्तों ने प्रभु शीतलनाथ का अभिषेक एवं शांतिधारा की। विधानचार्य रविंद्र जैन शास्त्री के कुशल निर्देशन में उपस्थित सभी भक्तों ने मंत्रोच्चारण के साथ उत्तम सत्य धर्म की पूजन की क्रियाएं संपन्न की विधानचार्य रविंद्र जैन शास्त्री ने उत्तम सत्य धर्म के बारे में भक्तों को बताते हुए कहा कि उत्तम सत्य धर्म कहता है की जो मनुष्य हमेशा अपने मुख से सत्य वचन कहता है वह कभी दुखी नहीं होता है। जैन दर्शन में सत्य का अर्थ मात्र ज्यों का त्यों बोलने का नाम सत्य नहीं है।बल्कि हित-मित-प्रिय वचन बोलने से है। हितकारी वचन यानि जिसमें जीव मात्र की भलाई हो कहने का अभिप्राय ये है कि जिन वचनों से यदि किसी जीव का अहित होता हो तो वे वचन सत्य होते हुये भी असत्य ही है।इस अवसर पर वीरेंद्र कुमार जैन,नरेश जैन राकेश जैन पार्षद,सुभाष जैन,धर्मेंद्र जैन,देवेंद्र जैन,अशोक जैन,सुमन जैन सुशील जैन,अल्पना जैन सुनीता जैन समस्त गुदड़ी मंसूर खां जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। **रिपोर्ट शुभम जैन**

सत्य प्रताड़ित हो सकता है मगर कभी पराजित नहीं हो सकता है : आर्यिका श्री पवित्रमति माताजी

सुरेश चंद्र गांधी. शाबाश इंडिया

नौगामा जिला बांसवाड़। उत्तम सत्य धर्म के पांचवें दिन आज प्रातः 1008 आदिनाथ मंदिर की 1008 भगवान महावीर समवशरण सुखोदय तीर्थ नसिया जी में विशेष शांति धारा अभिषेक किया गया अभिषेक के बाद चातुर्मास परिसर में सिंहासन पर विराजमान श्रीजी की प्रतिमा का अभिषेक शांति धारा पवित्रमति माताजी करणमती माताजी , गरिमा मति माताजी के सानिध्य में श्रीजी का अभिषेक किया गया। अभिषेक करने का प्रथम सौभाग्य साध्य कपिल पंचोरी को प्राप्त हुआ एवं उपस्थित संस्कार शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों द्वारा अभिषेक किया गया अभिषेक के बाद पंडित रमेश चंद्र गांधी, मोनू भैया मुंगावली मध्य प्रदेश, वीणा दीदी के दिशा निर्देशन में पंच मेरु विधान के अर्घ्य बड़ी भक्ति भाव से वाद्य यंत्रों की मधुर स्वरों के साथ बारी-बारी से चढ़ाए गए इस अवसर पर दसलक्षण पूजन सोलहकारण पूजन, पंचमेरु पूजन की गई ।

'उम्मीद कायम तो जीत निश्चित' पुस्तक का विमोचन

उदयपुर. शाबाश इंडिया। शहर के युवा लेखक वंदन राज टाक की दूसरी पुस्तक 'उम्मीद कायम तो जीत निश्चित' का विमोचन गुरुवार को हुआ। हिन्दी और अंग्रेजी में भाषा में लिखी गई । इस मोटिवेशनल किताब का विमोचन उदयपुर जिला कलेक्टर अरविंद पोसवाल ने किया। वंदन राज ने बताया कि इस किताब के रूप में उन्होंने अपनी सोच और अपने विचारों को कहानियों का रूप दिया है, जिसमें उन्होंने अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग लोगों के जीवन को दर्शाया है। वंदन राज की लिखी हुई इन कहानियों को पढ़ कर हर व्यक्ति ज़िंदगी में आगे बढ़े, अपनी मंज़िल को नैतिकता और नीति के साथ पाते हुए समाज और दुनिया के लिए मददगार बने, यही उनकी ख़्वाहिश है।

दशलक्षण पर्व का छटवा दिन उत्तम संयम

संयम और जीवन का संबंध सुई ओर धागे जैसा है: आचार्य सिद्धांत सागर

बेला जी, इंदौर. शाबाश इंडिया

आचार्य श्री सिद्धांत सागर जी ने बेला जी तीर्थ क्षेत्र मे अपने प्रवचन मे कहा की संयम और जीवन का संबंध सुई और धागे के समान है। जैसे बिना धागे के सुई की खोने की संभावना अधिक है ठीक इसी प्रकार बिना संयम के जीवन बहुत दुखदायी है। जैनागम में लिखा है कि एक लाख गायों का दान देने की बजाय संयम ज्यादा श्रेष्ठ है, क्योंकि दान से पुण्य होता है पर संयम से कर्मों का क्षय होता है। दान हृदय की सरलता है पर संयम हृदय की शुद्धता है आज संयम का अभाव है इसलिए तो समाज में और संसार में इतना अधिक अतिक्रमण है। संयम का अर्थ है जीवन को दिशा देना, मार्ग देना। बिना संयम के हमारा जीवन ऐसा है जैसे आदमी सभी दिशाओं में भाग रहा हो और जिसे ठीक पता न हो कि कहाँ जाना है और क्या पाना है। बिना संयम के जीवन ऐसा है जैसे अंधा आदमी अँधेरे में तीर चला देता है। संयम का अर्थ है लक्ष्य का ठीक बोध, सही निशाना देखकर तीर चलाना। जीवन में सभी कुछ नहीं पाया जाता। अगर हम एक चीज पाना चाहते हैं तो हजार चीजें छोड़नी पड़ती हैं। जिसने सभी कुछ पाने की कोशिश की वह बिना कुछ पाये ही समाप्त हो जाता है। इसलिए इच्छाओं का संयम बहुत जरूरी है। संयम को भट्टी कहा है। जिसमें व्यर्थ का कचरा जल जाता है और उपलब्धि का स्वर्ण निखर आता है। संयम का अर्थ है हमारा जीवन संतुलित हो, संयम जीवन की प्रमुख धारा है जिसका संबंध मन से है। प्रकृति भी संयम से चलती है। जैसे सूर्य और चंद्र दोनों अपने-अपने समय पर आकाश मंडल में आते हैं। नदी भी दो तटों के बीच संयमित गति से बहती है। हवा, पानी, बादल और ऋतुएँ- ये सब अपनी मयार्दा में रहकर जगत के लिए उपकारक बनते हैं। यदि प्रकृति मयार्दा छोड़ दे तो बाढ़ भयंकर रूप ले लेगी। सूर्य यदि अधिक तपने लगे तो प्राणियों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। वैसे ही ऋतुएँ अपने- अपने समय में आने के बदले आगे-पीछे आने लगें या मयार्दा में न रहें तो सभी का जीवन खतरे में पड़ जायेगा। अतः मानव जीवन में संयम आवश्यक है। जैसे बिना ब्रेक की कार और बिना हस्ताक्षर का चेक व्यर्थ है वैसे ही बिना संयम का जीवन व्यर्थ है। फैक्ट्री में मशीनों पर यदि नियंत्रण न रखा जाए तो अघटित होना निश्चित है। ड्राइवर यदि सही ढंग से गाड़ी नहीं चलाए तो उसकी दुर्घटना निश्चित है। जब तक पूर्णता नहीं आती तब तक संयम का बंधन आवश्यक है। एक कथा आती है कि असुरों ने प्रबल पराक्रम से देवों को इक्कीस बार हराया और इंद्र के पद पर आसीन हो गये, फिर भी उन्हें स्वर्ग छोड़ना पड़ा। इस घटना का रहस्य जानने के लिए कहा जाता है कि नारदजी ब्रह्मा के पास पहुँचे तो ब्रह्मा ने रहस्य उद्घाटित करते हुए कहा- प्रबल पराक्रम से असुरों ने शक्ति रूप ऐश्वर्य तो पाया पर उसका उपभोग संयमी ही कर सकता है। संयम रखना जरूरी है पर कहाँ संयम रखें? यूँ तो प्रतिपल हमें अपनी इंद्रियों के ऊपर संयम रखना चाहिए। इंद्रियों पर संयम रखने के लिए मन पर संयम होना चाहिए। यदि ऐसा न कर सको तो कम से कम तीन अवसरों पर संयम रखना जरूरी है 1. सामने यदि बादशाह हो तो आँखों में संयम हो, 2. सामने यदि फकीर हो तो मन पर संयम हो, 3. सामने यदि विद्वान हो तो वाणी पर संयम होना चाहिए। प्रकृति का यही एक नियम कि अति का विध्वंस अवश्य हो जाता है। कहा भी है कि ''अति सर्वत्र वर्जयेत''। अति अंधकार आँखों की शक्ति का उपयोग करने नहीं देता और अति प्रकाश में भी आँखें चूँधिया जाती हैं और आँखों की शक्ति का उपयोग नहीं हो पाता। उत्तम संयम से अभिप्राय है कि हाथ का संयम रखें, पैर का संयम रखें, वाणी का संयम रखें और पाँचों इंद्रियों का संयम रखें। जहाँ यम और नियम दोनों एक पथ पर समायोजित हो जाते हैं वहीं संयम की अर्थवत्ता प्रकट होती है। उत्तम संयम का अधिकारी भी वही है। जिसका मन यम-नियमों में सम्यक प्रकार से जुड़ गया हो। संयम को जीवन-शैली बना लो जिससे हमारा बैठना-उठना- चलना-सोना-बोलना-भोजन करना सब संयममय हो ताकि संयम का प्रकाश हमारे अंतस को भी रोशनी दे सके। संयम ही जीवन है यदि कोई जीना जाने, संयम ही अमृत है यदि कोई पीना जाने। संयम ही सुई-धागा है यदि कोई सीना जाने, संयम ऊँचा महल है यदि कोई चढ़ना जाने।। प्रेषक आर के जैन इन्दौर संयोजक श्री दिगम्बर जैन गणधर तीर्थ क्षेत्र बेला जी जिला दमोह मध्य प्रदेश।

धर्म के मार्ग पर चलकर ही जीवन का उत्थान संभव: ज्ञान सादिका मधु सुधा

उदयपुर. शाबाश इंडिया

गुरुवार को पंचायती नौहरा, मुखर्जी चौक में आयोजित एक धर्मसभा में ज्ञान सादिका मधु सुधा ने श्रद्धालुओं को धर्म के महत्व का उपदेश देते हुए कहा कि धर्म का मार्ग ही ऐसा मार्ग है जो जीवन का निर्माण और आत्मा का उत्थान कर सकता है। उन्होंने बताया कि तप और त्याग के माध्यम से शरीर की शुद्धि और आत्मा की पवित्रता प्राप्त होती है, जिससे जीवन में सरलता आती है। व्यक्ति जितना सरल और सहज रहेगा, उतना ही उसके जीवन का विकास संभव होगा। साध्वी संयमसुधा ने अपने भजनों के माध्यम से समझाया कि धर्म और दर्शन में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं, जिनसे पता चलता है कि पापी व्यक्ति भी यदि धर्म और गुरु के संपर्क में आता है, तो वह उत्कृष्ट धर्म आराधना के माध्यम से जीवन में सद्गति प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि पापी व्यक्ति भी यदि उत्कृष्ट धर्म की साधना करता है, तो उसकी सराहना की जानी चाहिए, न कि निंदा। अहंकारी व्यक्ति की कोई भी बात किसी का कल्याण नहीं कर सकती। मीडिया प्रवक्ता निलिष्का जैन ने बताया कि धर्मसभा में प्रखर वक्ता डॉ. प्रीति सुधा जी निरंतर तपस्या की ओर अग्रसर हैं। इस अवसर पर श्री संघ के अध्यक्ष सुरेश नागौरी, महामंत्री रोशनलाल जैन, दिनेश हिगंड, श्राविका संघ की अध्यक्षा मंजू सिरोया, संतोष जैन, पुष्पा खोखावत सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। **रिपोर्ट : निलिष्का जैन**

सत्य वादी व्यक्ति आत्मविश्वास, सुख से परिपूर्ण व भय मुक्त यही उत्तम सत्य धर्म

कामां. शाबाश इंडिया

सत्यवादी व्यक्ति हमेशा आत्मविश्वास से भरा हुआ और सुख से परिपूर्ण नजर आता है। उसको किसी भी प्रकार का भय, आशंका एवं चिंता नही रहती है जबकि उसके विपरीत झूठ बोलने वाला हमेशा भय ग्रस्त रहता है और एक झूठ को छुपाने के लिए अनेकों झूठ बोलने को मजबूर होता है उक्त वक्तव्य शांतिनाथ दिगंबर जैन खंडेलवाल पंचायती मंदिर दीवान में दस लक्षण महापर्व के पांचवें दिवस उत्तम सत्य की विवेचना करते हुए रिंकू जैन ने कहे।

झुमरीतिलैया जैन मंदिर में उत्तम सत्य धर्म

कोडरमा। जैन धर्म का महापर्व दशलक्षण पर्युषण महापर्व का आज पांचवा दिन उत्तम सत्य धर्म के रूप में मनाया गया जिसमें आचार्य विद्यासागर जी की शिष्या ब्रह्मचारिणी गुणमाला दीदी व चंदा दीदी ने सत्य धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन धर्म सत्यमेव जयते पर विश्वास करता है सत्य की हमेशा जीत होती है उसे परेशान तो किया जा सकता है परंतु पराजित नहीं किया जा सकता सत्य शब्दों में नहीं अनुभूति में होता है शब्दों के माध्यम से जो कहा जाता है वह पूर्ण सत्य नहीं होता,लेकिन जब तक व्यक्ति सत्य से परिचित नहीं होता तब तक अंदर के सत्य को भी नहीं पा सकता आज व्यक्ति सत्य को भूलकर प्रत्येक समय प्रतिक्षण झूठ बोलता है मकान हो या दुकान ,घर हो या ऑफिस, पत्नी हो या बच्चे, मित्र हो या पड़ोसी,सबके बीच में झूठा सत्य बोलता, है यही संस्कार बच्चों पर पढ़ते हैं सत्य की अनुभूति शब्द से नहीं सदाचरण से होती है अपने जीवन में परिवार में समाज में सत्य की आस्था पर ही अपने भविष्य को स्थापित किया जा सकता है।आज शहर के दोनों मंदिरों में प्रातः विश्व शांति मत्रों से अभिषेक शांतिधारा किया गया जिसमें बड़े मंदिर के मूल वेदी पर 1008 श्री पारसनाथ भगवान का प्रथम अभिषेक बिनोद-संजय जैन गंगवाल,श्री विहार ओर प्रथम अभिषेक ललित-सिद्धार्थ जैन सेठी,दूसरी ओर से स्वर्ण झारी से शशि-रीता जैन सेठी और 1008 आदिनाथ भगवान की वेदी में 1008 आदिनाथ भगवान की प्रतिमा पर प्रथम अभिषेक ओर शांतिधारा सुभाष-कुणाल ठोल्या एवं नया मंदिर जी मे 1008 शांतिनाथ भगवान का प्रथम अभिषेक ओर शांतिधारा प्रदीप-पीयूष-राहुल जैन छाबडा परिवार को प्राप्त हुआ।तत्पश्चात विधान की पूजन की गई जिसमें आज अजय-अमित गंगवाल के परिवर के द्वारा मंडप पर श्री फल चढ़ाया गया। मंदिर मे ब्रह्मचारी दीदी के द्वारा जैन धर्म के सबसे बड़े ग्रंथ तत्त्वार्थसूत्र का वाचन दोनों मंदिर जी मे हुवा।संध्या में भव्य भजन आरती का कार्यक्रम मंदिर में किया गया रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम सब खेलो सब जीतो मनोरंजन कार्यक्रम हुवा जिसमें समाज के सैकड़ो लोगों ने भाग लिया विजेताओं को पुनयार्जक परिवार एवं समाज के पदाधिकारी राज छाबड़ा सुरेंद्र काला सुशील छाबड़ा कमल सेठी , नविन- बबिता जैन सेठी के द्वारा पुरस्कृत किया गया।मीडिया प्रभारी राज कुमार अजमेरा,नविन जैन।

प्रदेश का पहला जैन शास्त्री कन्या विद्यालय सर्वार्थसिद्धि भोपाल में शुरू

रत्नेश जैन रागी । शाबाश इंडिया

भोपाल। समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट उदयपुर द्वारा मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में देश का द्वितीय एवं मध्य प्रदेश का प्रथम जैन कन्या शास्त्री महाविद्यालय इस सत्र में ज्योति नगर भोपाल में प्रारंभ हो चुका है तथा 20 बालिकाओं ने प्रवेश लेकर अध्ययन भी प्रारंभ कर दिया है। समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष पंडित राजकुमार जी शास्त्री, उदयपुर ने चर्चा के दौरान बताया कि भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण महोत्सव वर्ष तथा आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के पुण्य प्रभावना योग में ट्रस्ट द्वारा सर्वार्थसिद्धि नाम के संकुल की स्थापना भौतिकता की चकाचौंध में अहिंसक जैनाचार एवं वीतरागी तत्वज्ञान से दूर भाग रही युवा पीढ़ी को तत्वज्ञान एवं श्रावकाचार से जोड़ने के उद्देश्य तथा शांतिमय जीवन जीने की कला सिखाने के उद्देश्य से बालिकाओं को लोकोत्तर व लौकिक शिक्षण हेतु केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय से 10वीं एवं 12वीं उत्तीर्ण बालिकाओं को शास्त्री की शिक्षा के साथ ही श्रावकाचार जीवनोपयोगी योग,आयुर्वेद,पाक-कला, कम्प्यूटर आदि विषयों के शिक्षण हेतु पारिवारिक एवं धार्मिक वातावरण का छात्रावास सर्वार्थसिद्धि प्रारंभ किया गया है। क्योंकि मध्य प्रदेश में केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय होने के बाद भी एक भी बालिका विद्यालय एवं महाविद्यालय नहीं है जिसके कारण इच्छुक बालिकाएं शास्त्री की शिक्षा गृहण नहीं कर पा रही थी। सर्वार्थसिद्धि संकुल का संपूर्ण संचालन ट्रस्ट के महामंत्री डॉक्टर महेश जी भोपाल के दिशानिर्देश में श्रीमती अंजुलता के संयोजकतत्व से संचालित हो रहा है जहां सुश्री खुशबू शास्त्री, शशांक शास्त्री,डॉ. योगेश जी, निपुण शास्त्री,अंकुर शास्त्री, डॉ. संजीव जैन,अभिषेक शास्त्री बड़ी लगन एवं मेहनत से बालिकाओं को संस्कारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। पंडित राजकुमार जी शास्त्री ने सर्वार्थसिद्धि पधार कर संकुल का अवलोकन कर अपनी बालिकाओं को भी प्रवेश दिलाने का अनुरोध किया।

सत्य बाहर नहीं सत्य तो अंदर है...

शाबाश इंडिया। वास्तव में अगर सत्य हमारे हृदय में अवतरित हो जाए तो संसार की कोई भी शक्ति हमें शिवपुर पहुंचने से नहीं रोक सकती है। सत्य के बिना तो सारा जगत शमसान के समान शून्य है। हम दान, दया, परोपकार, सेवा , तपस्या , ब्रह्मचर्य आदि के माध्यम से पृथ्वी को स्वर्ग बना सकते हैं पर सत्य के माध्यम से स्वयं को ही स्वर्गवत बना सकते है । इसीलिए सत्य के प्रति अग्रसर होओ। आज का आदमी इतना निकृष्ट हो चुका है कि सत्य को जानकर भी असत्य को दामन में संजोये हुए है उसी के सहारे जीवन चल रहा है अपनी अहं की पुष्टि के लिए भी सत्य को असत्य की पोशक पहना रहा है। सत्य को जानकर भी अनजान बन रहा है। पूर्ण असत्य में जिंदगी गुजार कर भी अपने को सत्य निष्ठ घोषित कर रहा है। अपने को सत्यान्वेषी सिद्ध कर रहा है। आज व्यक्ति सत्य को समझे बिना सत्य को पाने दौड़ रहा है, पर सत्य बाहर नहीं भीतर है। सत्य तो दर्पण है दर्पण कभी नही कहता कि आओ मुझे देखो। वह तो अपने में स्थिर है पर व्यक्ति दर्पण के पास जाता है तब दर्पण गौण हो जाता है रूप सामने आ जाता है वही रूप तुम्हारा है। स्वयं को देखना ही दर्पण को देखना है , जैसे छाया को पकड़ने से छाया पकड़ में नहीं आती पर स्वयं को पकड़ने से छाया सहज ही पकड़ी जाती है। वैसे ही सत्य को पकड़ा नही जा सकता स्वयं को पकड़ लो सत्य स्वतः ही तुम्हारे वश में हो जाएगा, यह बात सत्य है कि प्रारंभ असत्य सत्य से ज्यादा प्रभावशाली नजर आता है पर सत्य का बीज जैसे ही अंकुरित होता है असत्य की धरती को भी फाड़ देता है। अतः सत्य की क्षमता अनन्त है , उसे प्रगट करने की आवश्यकता है।**प्रेषक विशाल पाटनी**

श्री 1008 चंद्रप्रभु दिगंबर जैन पल्लीवान मंदिर में उत्तम शौच धर्म की पूजा हुई

जयपुर. शाबाश इंडिया

दसलक्षण के पावन पर्व पर श्री 1008 चंद्रप्रभु दिगंबर जैन पल्लीवान मंदिर में (उत्तम शौच) के दिन 48 दीपकों से बहुत ही भक्तिमय रूप से भक्तांबर पाठ किया गया। विधानाचार्य अमित शास्त्री ने इस पाठ को सम्पन्न कराया। मंदिर अध्यक्ष शिखर जैन और मंत्री पारस जी गहनोली ने प्रथम दीपक प्रज्वलित कर इस पाठ का प्रारंभ किया। इस मौके पर पुलक मंच अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा जी बडजात्या और पिंकी जैन ने आकर कार्यक्रम में सहभागिता दी। इस कार्यक्रम में समाज के सभी गणमान्य लोग उपस्थित थे। राजकुमार बेद, प्रमोद जी गंगवाल,प्रेमलता बोहरा, सुनीता अजमेरा, मीनू गंगवाल, राजकुमारी बेद, अंकिता बिलाला ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी सहभागिता प्रदान की।

श्री दिगम्बर जैन मंदिरों में उत्तम सत्य धर्म की पूजा

जैन धर्मावलंबियों ने की उत्तम सत्य धर्म की विशेष पूजा-अर्चना

ब्यावर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर में दशलक्षण पर्यूषण महापर्व के पांचवे दिन गुरुवार को उत्तम सत्य धर्म के रूप में मनाया गया। श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर हाउसिंग बोर्ड में श्री शांतिनाथ भगवान के स्वर्ण कलशो श्रीजी अभिषेक करने का सोभागय दीपक जैन काला परिवार को रजत कलशों से शान्ति धारा करने का सौभाग्य सुरेन्द्र छाबड़ा राकेश डोसी दिनेश जैन अजमेरा कमल जैन मुकेश जैन कमलेश जैन पवन भगत महावीर जैन मनीष जैन जितेन्द्र शैलेन्द्र मृदुल आकाश जैन विकाश जैन प्रेम चन्द जैन पारस मल जैन उत्तम चन्द परिवार को प्राप्त हुआ। पण्डित अभिषेक जी शास्त्री ने अपने प्रवचन में कहा की उत्तम सत्य धर्म कहता है की जो मनुष्य हमेशा अपने मुख से सत्य वचन कहता है वह कभी दुखी नहीं होता है। जैन दर्शन में सत्य का अर्थ मात्र ज्यों का त्यों बोलने का नाम सत्य नहीं है, बल्कि हित-मित-प्रिय वचन बोलने से है। हितकारी वचन यानि जिसमें जीव मात्र की भलाई हो, कहने का अभिप्राय ये है कि जिन वचनों से यदि किसी जीव का अहित होता हो तो वे वचन सत्य होते हुये भी असत्य ही है। मित यानि मीठा बोलो अर्थात कड़वे वचन, तीखे वचन, व्यंग्य परक वचन, परनिंदा, पीड़ाकारक वचन सत्य होते हुये भी असत्य ही माने गये हैं। प्रिय वचन यानि जो सुनने में भी अच्छे लगे, ऐसे वचन ही सत्य वचन हैं। सत्य धर्म का बीज है और सत्य हमेशा सम्मान प्राप्त करता है। सत्य शब्दों में नहीं अनुभूति में होता है, शब्दों के माध्यम से जो कहा जाता है,वह पूर्ण सत्य नहीं होता, लेकिन जब तक व्यक्ति सत्य से परिचित नहीं होता तब तक अंदर के सत्य को भी नहीं पा सकता है। ऐसे सत्य वचनों को समझे बिना जीव का कल्याण संभव नहीं है। सत्यवादी की ही सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है, वहीं सुखी है। नम्रता और प्रिय संभाषण ही मनुष्य के आभूषण माने गये हैं। श्री दिगंबर जैन पंचायती नसिया में पर्युषण के पावन पर्व के अवसर आज सांयकाल में श्री आचार्य विद्यासागर पाठशाला द्वारा चक्र घुमाओ मोक्षपुरी जाओ कार्यक्रम का मंचन किया गया, कार्यक्रम में दिगंबर जैन पंचायत के अध्यक्ष अशोक काला उपाध्यक्ष विजय कुमार फागीवाला मंत्री दिनेश अजमेरा जैन संजय रावका सजय गगवाल प्रकाश गदिया युवा मण्डल के अध्यक्ष रितेश फागीवाला, उपाध्यक्ष अंकुर अजमेरा, सचिव राकेश गोधा, सहसचिव अतुल बड़जात्या, कोषाध्यक्ष पवन पाटनी प्रमोद बड़जात्या, कल्पेश जैन, मनीष अजमेरा, चन्द्रेश रांवका, संजय जैन, मनोज सोगानी, मोहित जैन पाठशाला की अध्यापिकाएं भारती जैन, कोपल फागीवाला, पूजा कोठारी, मनीष गोधा, सविता पाटनी, रेणुका रावंका, पायल फागीवाला, ज्योति जैन सहित सकल दिगम्बर जैन समाज की है महिला पुरूष उपस्थित थी।

सुगन्ध दशमी पर्व कल

दिगंबर जैन समाज के मीडिया प्रभारी अमित गोधा ने बताया कि कल दिगम्बर जैन समाज द्वारा सुगंध दशमी मनाई जाएगी। इस दिन जैन समाज की महिलाओं द्वारा उपवास किया जाता है और मंदिरों में धूप खेई जाएगी।सुगंध दशमी (धूप दशमी) का पर्व उत्साहपूर्वक मनाया जाएगा।

कीर्तिनगर जैन मंदिर कीर्तिनगर में दशलक्षण महापर्व का पांचवां दिन

सत्य का संबंध ज्ञान व विवेक से: मुनिश्री श्री समत्व सागर

जयपुर. शाबाश इंडिया। टोंक रोड,कीर्ति नगर के जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर बुधवार को उत्तम शौच धर्म की आराधना की गई। इस मौके पर मुनिश्री श्री समत्व सागर जी महाराज ने ;भावों से भव; नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी गई,जो सभी को पसंद आया। सुगंध दशमी पर वैभव जैनत्व विषय पर झांकी सजाई जाएगी। मंदिर अध्यक्ष अरुण काला व प्रचार संयोजक आशीष बैद ने बताया कि आज सुबह श्रीजी की शांतिधारा के बाद साजो के बीच पूजा की गई। इस मौके पर हुई धर्मसभा को संबोधित करते हुए धर्मसभा में मुनि श्री समत्व सागर जी महाराज ने उत्तम सत्य धर्म को समझाते हुए कहा कि सत्य का संबंध ज्ञान व विवेक से होता है। इसे बोलने से पहले समझना, जानना ज्यादा आवश्यक है। सत्य बोले बिना भी काम चल सकता है, लेकिन सत्य जाने बिना काम नहीं चल सकता यही विवेक है। सत्य को जाने बिना बोला नहीं जा सकता है। भगवान महावीर जैसे तीर्थंकर महापुरुष सत्य में प्रवेश करते ही मौन हो गए, और बारह वर्ष तक नहीं बोले। इसी तरह मोक्षकारी बाहुबली बारह माह नहीं बोले। वह सत्य को जानने व समझने के बाद ही बोले थे। सत्य साधन नहीं, अपितु साधना है। वाचनिक सत्य तब तक असत्य की श्रेणी में ही रहता जब तक उस सत्य को जाना नहीं जाता है। जैन धर्म कहता है सत्य को जानना जरूरी है। दशलक्षण पर्व के दस अंगों में भी सत्य होता है। ब्रह्म मनुष्य जीवन के भी दो छोर होते हैं। सत्य ही ब्रह्म है। सत्य के पश्चात शेष चार संयम,तप, त्याग और आकिंचन्य धर्म के पालन से ब्रह्म की प्राप्ति होती है। यही जीवन का सार व सार्थकता है। उन्होंने बताया कि साम को आरती के बाद सांस्कृतिक कार्यकम के तहत तहत ;भावों से भव; नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी गई,जो सभी को पसंद आया। इस दौरान कापफी संख्या में समाज के लोग मौजूद रहे। इस मौके पर दीप प्रज्जवलनकर्ता अशोक कुमार, शकुंतला, अंकित-प्रियंका चांदवाड परिवार रहे। उन्होंने बताया कि सुगंध दशमी मनाई जाएगी।

ज्ञानतीर्थ टोडरमल स्मारक भवन में दशलक्षण महापर्व का पांचवां दिन

अपने को शरीर मानना ही सबसे बड़ा झूठः सुमतप्रकाश जैन

जयपुर. शाबाश इंडिया

पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के बैनर तले बापू नगर स्थित ज्ञानतीर्थ पंडित टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे दशलक्षण महापर्व के पांचवे दिन गुरुवार को उत्तम सत्य धर्म की आराधना की गई। 17 सितम्बर तक मनाए जाने वाले इस महापर्व में दशलक्षण विधान,विद्वानों के प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित अनेक आयोजन हो रहे है। महामंत्री परमात्म प्रकाष भारिल्ल ने बताया कि आज सुबह श्रीजी के अभिषेक के बाद पर साजों के बीच दशलक्षण विधान हुआ। इस दौरान आया दशलक्षण पर्व महान...महावीरा से ध्यान लगाना...जैसे भजनों की स्वर लहरियों के बीच वातावरण भक्तिमय हो गया। इस अवसर पर श्रावक- श्राविकाओं को संबोधित करते हुए विश्व सविख्यात बाल ब्रह्मचारी सुमतप्रकाश जैन, खनियाधाना ने उत्तम सत्य धर्म के बारे में समझाते हुए कहा कि वचन में सत्य असत्य नही होता है, वह तो अपने प्रयोजन पर निर्भर करता है। अपने को शरीर मानना ही सबसे बड़ा झूठ है ।यदि हम अपने कर्म का फल हंसकर बिना किसी प्रतिक्रिया के भोगते है तो हम अपने असंख्यात भव कम कर लेते है। उन्होंने आगे कहा कि सत्य की आराधना के लिए मन की अनिवार्यता पवित्रता है। सत्य पाना है तो मन को मंदिर बनाओ, तभी परमात्मा प्रकट होंगे। असत्य मन को अपवित्र बनाता है। सत्य की पहली कड़ी मानसिक पवित्रता है। जब तक जीवन में सत्य अवतरित नहीं होता जीवन का मूल्य नहीं होता।

सेठी कॉलोनी जैन मंदिर में आज होगी भजन संध्या

जयपुर. शाबाश इंडिया

आगरा रोड,सेठी कॉलोनी स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में दषलक्षण महापर्व के तहत गुरुवार को उत्तम सत्य धर्म की आराधना की गई। इस दौरान श्रीजी की शांतिधारा व पूजा-अर्चना व सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। शुक्रवार को सुगंध दशमी मनाई जाएगी। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष दीन दयाल जैन पाटनी व मंत्री धमीचंद कासलीवाल ने बताया कि आज सुबह श्रीजी की शांति धारा व नित्य नियम पूजा के बाद साजों के बीच दशलक्षण की पूजा की गई। इस दौरान भजनों की स्वर लहरियों से वातावरण भक्ति और आस्था के रंग में डूब गया। इसी दिन साम को आरती के बाद सन्मति महिला मंडल की ओर से सम्यकदर्शन के छठवें अंग स्थिरीकरण पर वारिशेण मुनिराज अंग पर नाटक की प्रस्तुति दी गई,जिसे सभी ने पसंद किया। उन्होंने बताया कि शुक्रवार को सुगंध दषमी मनाई जाएगी। इस मौके पर साम 7.15 बजे मंदिर प्रांगण में भजन संध्या में आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर प्रख्यात भजन गायक संजय रायजादा वे गायिका नेहा काला भजनों की प्रस्तुति देंगे। मुख्य अतिथि सांसद मंजु शर्मा, विशिष्ठ अतिथि भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी, समाजसेवी रवि नैयर,पार्षद नीरज अग्रवाल व लक्ष्मी सुथार होगी।

महिला जागृति संघ द्वारा धार्मिक हाऊजी खेलने वाले सभी को पुरस्कार दिए गए

जयपुर. शाबाश इंडिया। दसलक्षण पर्व के अवसर पर महिला जागृति संघ द्वारा बड़े दीवान जी के मंदिर मणिहारो का रास्ता में आज धार्मिक हाउजी प्रतियोगिता आयोजित की गई। संयोजक शशि जैन,शारदा सोनी और मंजू छाबड़ा ने बताया कि प्रतियोगिता में 50 से अधिक बच्चों और महिलाओं ने भाग लिया। संस्था सचिव बेला जैन ने बताया कि संस्था अध्यक्ष शशि जैन ने सभी प्रतिभागियों को धार्मिक प्रश्न पूछ गेम खिलाया। धार्मिक हाऊजी में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को संस्था की ओर से पुरस्कार प्रदान किए गए। सुगंध दशमी के अवसर पर शुक्रवार को महिला जागृति संघ द्वारा बड़े दीवान जी के मंदिर में सजीव झांकी ''राजमहल से जंगल की ओर'' सायंकाल 7 बजे से 10.30 बजे तक प्रदर्शित की जाएगी।

पंचमेरू उपवास की तपस्या करने वाली महिलाओं के तप की अनुमोदना

मनीष पाटनी. शाबाश इंडिया

अजमेर। श्री दिगंबर जैन दशलक्षण के पावन पर्व पर जैन समाज द्वारा तपस्या के रूप में उपवास एवम व्रत आदि किए जाते है इस कड़ी में श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति की युवा महिला संभाग की प्रकोष्ठ मंत्री रेनू पाटनी,प्रिया पाटनी एवम अनीता गंगवाल ने पंचमेरु के उपवास कर तपस्या की जिसकी सर्वोदय कॉलोनी स्थित 1008 श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन जिनालय में एक समारोह कर उपस्थित महिलाओ एवम पुरुषो ने भजनों की प्रस्तुति देते हुए उनके तप की अनुमोदना की। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी एवम युवा महिला संभाग अध्यक्ष सोनिका भैंसा ने बताया कि इस अवसर पर बंगलोर संस्कृत विद्यालय से आए आराध्य भईया ने पंचमेरु उपवास के महत्व पर प्रकाश डाला इस अवसर पर जयपुर से आई सुनीता गंगवाल,सोनिका भैंसा,विनीता पाटनी, नीलिमा पाटनी,मधु जैन,सरला लुहाड़िया,रेखा बाकलीवाल,अंतिमां गदिया,वर्षा बड़जात्या,अंजू पाटनी,मंजू ठोलिया,मधु काला आदि ने भजनों की प्रस्तुति दी एवम श्रीजी के सम्मुख भक्ति नृत्य किए। श्री दिगंबर जैन महासमिति अजमेर के अध्यक्ष अतुल पाटनी ने बताया कि इस अवसर पर समाजश्रेष्ठी प्रतिभा सोनी,मंदिर मंत्री विनय गदिया धनकुमार जैन,मनीष पाटनी,नवीन पाटनी,अनीता पाटनी, ताराचंद सेठी,कमल कासलीवाल, इंद्रा कासलीवाल, सुषमा पाटनी,चिंतामणि जैन, अनामिका सुरलाया सहित बड़ी संख्या में जैन समाज के धर्मावलंबी मोजूद रहे।

जो साधुओं के द्वारा हितकारी उपदेश दिया जाता है वह सत्य धर्म है : मुनिश्री 108 पावनसागर जी महाराज

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुगार्पुरा में परम पूज्य मुनि श्री 108 पावनसागर जी महाराज ने दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन करते हुए बताया कि, जो साधुओं के द्वारा हितकारी उपदेश दिया जाता है वह सत्य धर्म है। स्वार्थ के वशीभूत असत्य वचन कहे जाते है,असत्य को छिपाते हैं।वक्ता को पूर्वाग्रह से मुक्त और निष्पक्ष होना चाहिए। सत्य के बिना धर्म निष्प्राण है। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र काला ने बताया कि दशलक्षण महापर्व में प्रातः 6.15 बजे प्रथम अभिषेक शांतिधारा भाग चन्द साह संवारिया वालों ने की। दशलक्षण मंडल विधान में उत्तम सत्य धर्म की पूजा मण्डल पर अशोक कुमार निर्मला गोधा ने श्रद्धालुओं के साथ बड़े भक्ति भाव से कर धर्म प्रभावना की। सांयकाल महा आरती करने का पुण्यार्जन श्रीमती ललिता देवी बाकलीवाल परिवार ने प्राप्त किया। गुरु भक्ति, विदूषी बहनें मानसी जैन व तनीषा जैन की तत्व चर्चा हुई है सांस्कृतिक कार्यक्रम में महिला मंडल ने सब खेलों सब जीतो का आयोजन किया।

आज मनाया जायेगा धूपदशमी महापर्व

आज दसलक्षण धर्म का पांचवा दिन

मनोज जैन नायक. शाबाश इंडिया

ग्वालियर । दसलक्षण पर्व के पांचवें दिन आज सुगंध दशमी को धूप दशमी के रूप में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जायेगा । 08 सितंबर, रविवार से दिगंबर जैन समाज के दशलक्षण महापर्व पर्व शुरू हो गए हैं जो 17 सितम्बर को समाप्त होंगे। इस पर्व के अंतर्गत आने वाला पर्व सुगंध/ धूप दशमी को बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य डॉ हुकुमचंद जैन ने बताया प्रतिवर्ष दश लक्षण महापर्व पर्व के भाद्रपद शुक्ल दशमी तिथि पर दिगंबर जैन धर्मावलंबियों द्वारा धूप दशमी का पर्व बड़े ही धूम धाम से मनाया जाता हैं। इस वर्ष यह पर्व शुक्रवार, 13 सितंबर को मनाया जा रहा है। इस दिन सभी जैन जिनालयों में 24 तीर्थंकरों, शास्त्रों तथा जिनवाणी के सम्मुख चंदन की धूप अग्नि पर खेवेंगे यानी धूप खेवन पर्व मनाया जाता है, जो कि जैन धर्म में बहुत महत्व रखता है। इस दिन धूप खेवन यानि जिनेंद्र देव के समक्ष धूप अर्पित करके यह पर्व मनाया जाता है। तथा इस दिन सभी जैन मंदिरों में दर्शनार्थियों की भीड़ देखी जा सकती है। धूप के इस पवित्र वातावरण से जैन मंदिरों में सुगंध नुमा वातावरण बन जाता है। इस पर्व को आनंद और उल्लास के साथ सभी जैन बच्चे,बड़े,महिला,पुरुष सभी हर्ष,उल्लास,के साथ मनाते है। इसे धूप दशमी, धूप खेवन पर्व भी कहते हैं। धूप की सुगंध से जिनालय महक उठते है। और वायुमंडल सुगंधित व स्वच्छ हो जाता है। ज्योतिषाचार्य ने कहा दिगंबर जैन धर्म में सुगंध दशमी व्रत का काफी महत्व है और महिलाएं हर वर्ष इस इस दिन निर्जला उपवास भी करती हैं। सुगंध दशमी के दिन हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह इन पांच पापों के त्याग रूप व्रत/ उपवास को धारण करते हुए चारों प्रकार के आहार का त्याग, मंदिर में जाकर भगवान की पूजा, स्वाध्याय, धर्म चिंतन, श्रवण, सामयिक आदि में अपना समय व्यतीत करने का बड़ा महत्व है। इस दिन जैन जिनालयों में विशेष आकर्षण बना रहता है, क्योंकि इस त्योहार पर मंदिरों में बेहतरीन साज-सज्जा, रंगोली के द्वारा जगह-जगह के मंदिरों में मंडल विधान की रचना तथा धार्मिक संदेश देते हुई कई अन्य रचनाएं बनाकर मनोहारी झांकियों का निर्माण किया जाता है तथा धार्मिक पुस्तकें, पुराणों तथा शास्त्रों को सजाया जाता है। इस अवसर पर सुगंध दशमी कथा का वाचन भी होता है। इस दिन जिनवाणी व पुराने शास्त्रों के सम्मुख धूप चढ़ाई जाती है तथा उत्तम तप धर्म की आराधना कर आत्म कल्याण की कामना की जाती है। मान्यतानुसार इस धार्मिक व्रत को विधिपूर्वक करने से मनुष्य के सारे अशुभ कर्मों का क्षय होकर पुण्य की प्राप्ति होती है तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। साथ ही सांसारिक दृष्टि से उत्तम शरीर प्राप्त होना भी इस व्रत का फल बताया गया है। इस दिन जैन धर्मावलंबी अपनी-अपनी श्रद्धानुसार कई मंदिरों में अपने शीश नवाकर सुगंध दशमी का पर्व बड़े ही उत्साह और उल्लासपूर्वक मनाते हैं।

विवेक विहार मंदिर में दसलक्षण पर्व के अवसर पर सत्य की जीत नाटक का मंचन हुआ

251 इंद्रो ने किया भगवान का अभिषेक

जयपुर. शाबाश इंडिया

विवेक विहार दिगंबर जैन समाज ने इस बार दसलक्षण पर्व के अवसर पर एक अनोखा और प्रेरणादायक कार्यक्रम आयोजित किया है। इस पर्व के अंतर्गत सत्य की जीत नाटक का मंचन और संगीतमय हाऊजी का आयोजन हुआ, जिसने सभी श्रद्धालुओं का दिल जीत लिया। समाज के प्रवक्ता नरेश जैन मेड़ता ने बताया कि दसलक्षण पर्व के चलते हर दिन धर्म से संबंधित एक से बढ़कर एक कार्यक्रम हो रहे हैं। यह पर्व न केवल धार्मिक आस्था को बढ़ावा देता है, बल्कि समाज में एकता और सद्भावना की भावना को भी प्रबल करता है। दसलक्षण पर्व के संयोजक सुनील सरावगी ने बताया कि ब्रह्मचारिणी रुबी दीदी टीकमगढ़ के सानिध्य में प्रातः काल से ही धार्मिक कार्यक्रमों की श्रंखला शुरू हो जाती है। दीदी के प्रवचन और उनके द्वारा कराया गया ध्यान सत्र सभी को आत्मिक शांति और ज्ञान प्रदान करता है। सत्य की जीत नाटक ने सभी का मन मोह लिया। नाटक में दिखाया गया कि सत्य की शक्ति अजेय होती है और झूठ का अंत निश्चित है। यह नाटक हमारे बच्चों के लिए भी एक शिक्षा का स्रोत बना। संयोजक सुनील सरावगी ने बताया कि ब्रह्मचारिणी रुबी दीदी के सानिध्य में प्रातः काल 251 इंद्रो ने माला मुकुट पहनकर भगवान के अभिषेक किये । अभिषेक के समय सुप्रसिद्ध संगीतकार संजय जैन लाडनूं ने संगीतमय माहौल बनाकर उमंग और उल्लास के साथ सभी इंद्र भक्ति के रंग में डूब गए इस अवसर पर मंदिर का वातावरण भक्ति में हो गया और जैन धर्म के जयकारे गूंजने लगे। अभिषेक के पश्चात भक्ति में पूजा अर्चना की गई । शाम को भगवान की सामूहिक आरती की गई । आरती के पश्चात ब्रह्मचारिणी रुबी दीदी के द्वारा स्वाध्याय पाठ किया गया । इसके पश्चात महिला मंडल के द्वारा संगीतमयम हाऊजी का कार्यक्रम हुआ। जिसमें पुरुष वर्ग महिला वर्ग एवं बच्चों ने भाग लिया।आयोजन में समाज अध्यक्ष अनिल जैन आईआरएस एवं मंत्री अरुण पाटनी ने आगामी होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की एवं महिला मंडल की अध्यक्ष सरला बगड़ा, मंत्री अलका पांडया,सुनीता कासलीवाल ने सभी पुण्याजक परिवारों का आभार व्यक्त किया इस अवसर पर समिति के कोषाध्यक्ष सुभाष कासलीवाल सहकोषाध्यक्ष प्रणय पतंगिया, धमीचंद जैन उपाध्यक्ष मुकेश सेठी, भागचंद पाटनी सहकोषाध्यक्ष प्रवीण जैन, सुधीर छाबड़ा एवं समस्त पदाधिकारी गण समाज सदस्य उपस्थित थे।

मुनि श्री ससंघ के सानिध्य में आयोजित स्व धर्म साधना शिविर में उमड़े श्रद्धालु, मनाया उत्तम सत्य धर्म

फोटो : कुमकुम फोटो
साकेत मोबाइल 9829054966

जयपुर. शाबाश इंडिया

मानसरोवर के मीरामार्ग स्थित आदिनाथ भवन में चातुर्मास कर रहे अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में गौखले मार्ग स्थित सामुदायिक केन्द्र सेक्टर 9 में गुरुवार को दशलक्षण महापर्व मनाया गया। इस मौके पर मुनि श्री के सानिध्य में चल रहे 10 दिवसीय स्वधर्म शिविर के 5 वें दिन उत्तम सत्य धर्म की पूजा की गई। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि इससे पूर्व दस दिवसीय स्व धर्म शिविर प्रातः 5.30 बजे से 7.00 बजे तक उत्तम सत्य धर्म पर अर्हं योग एवं ध्यान करवाया गया। ध्यान में मुनि श्री ने 10 प्राणों के बारे में बताया। मुनि श्री ने कहा कि शरीर अलग - आत्मा अलग और जीवन का अंतिम सत्य मृत्यु है। शिविर में प्रातः 5.00 बजे से रात्रि 8.30 बजे तक आत्म साधना के साथ पूजा भक्ति के विशेष आयोजन किये गये। संयुक्त मंत्री सीए मनोज जैन के अनुसार शिविर में तत्वार्थ सूत्र का विधान प्रारंभ हुआ जिसमें कुबेर इन्द्र बनने का सौभाग्य तीर्थोदय गोलाकोट एवं श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के अध्यक्ष रिटायर्ड आई पी एस एस के जैन एवं परिवार ने प्राप्त किया। मुनि श्री ने अपने प्रवचन में तत्वार्थ सूत्र के पांचवे अध्याय के 42 सूत्रों का वर्णन किया। मुनि श्री ने कहा कि जीव अजीव के सहयोग से ही यह संसार है। जैन विज्ञान कर्म प्रधान है। इस विज्ञान में कोई भी ब्रह्म तत्व नहीं हैं। हम स्वयं हमारे निमार्ता और विनाश के जिम्मेदार है। मुनि श्री ने जीव व काल द्रव्य के बारे में भी बताया। आकाश द्रव्य किस तरह से अन्य द्रव्यों को अवगाहन देता है। एक जीव हमेशा दूसरे जीव पर उपकार करता है। पुदगल अजीव द्रव्य भी जीव पर उपकार करते हैं। पर जीव द्रव्य सिर्फ जीव पर ही उपकार करता है। इस मौके पर 1500 से अधिक शिविरार्थियों ने 42 अर्घ्य समर्पित किये। इससे पूर्व धर्म सभा का दीप प्रज्जवलन व मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के पाद पक्षालन किये गये । सायंकाल प्रश्न मंच, आरती, प्रतिक्रमण पाठ के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। इस मौके पर समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील बैनाडा, उपाध्यक्ष तेज करण चौधरी, कोषाध्यक्ष लोकेन्द्र जैन राजभवन वाले, संयुक्त मंत्री सीए मनोज जैन, संगठन मंत्री अशोक सेठी, सांस्कृतिक मंत्री जम्बू सोगानी, अरुण श्रीमाल, एडवोकेट राजेश काला, अशोक गोधा, अशोक छाबड़ा, विजय झांझरी आदि ने सहभागिता निभाई। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने बताया कि शुक्रवार 13 सितम्बर को मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में दशलक्षण महापर्व के दौरान उत्तम संयम धर्म मनाया जाएगा । इस मौके पर प्रातः 5.30 बजे से 7.00 बजे तक अर्हं योग ध्यान, 7 बजे से श्री जी का अभिषेक, शांतिधारा, तत्वार्थ सूत्र विधान होगा। प्रातः 9.00 बजे मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के मंगल प्रवचन होगें ।दोपहर में 1.30 बजे से धर्म की कक्षा, तत्वार्थ सूत्र प्रवचन, दशम धर्म कक्षा, सायंकाल 6.00 बजे से प्रश्न मंच, आरती, सांस्कृतिक कार्यक्रम होगें।

दशलक्षण पर्व के अंतर्गत स्वर संगम अंताक्षरी प्रतियोगिता संपन्न

इंदौर. शाबाश इंडिया

पर्वराज दशलक्षण पर्व के अंतर्गत छत्रपति नगर स्थित दलाल बाग में महिला परिषद छत्रपति नगर द्वारा महिलाओं के लिए नगर स्तरीय स्वर संगम अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें उदय नगर, तिलक नगर, मोदीजी की नसिया, छत्रपति नगर एवं कालानी नगर के महिला संगठनों के चार-चार सदस्यों की टीम ने भाग लिया। पांच राउंड में संपन्न प्रतियोगिता में भजन राउंड, शब्द पकड़ राउंड, चित्र देख तीर्थ पहचानो राउंड, सिचुएशन राउंड एवं एक्टिंग राउंड के आधार पर प्रतिभागियों ने अपनी शानदार प्रस्तुति दी। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार उदय नगर महासमिति महिला मंडल, द्वितीय पुरस्कार तिलक नगर महिला मंडल एवं तृतीय पुरस्कार विद्या वधू मंडल छत्रपति नगर को प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता में सम्मिलित शेष चार टीमों को भी प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। निर्णायक श्रीमती सुनीता जैन एवं सपना अजमेरा थीं। संचालन श्रीमती मुक्ता जैन, सोनाली बागड़िया एवं मीना जैन ने किया। प्रतिभागी टीम के प्रमुख सदस्यों का स्वागत अध्यक्ष श्रीमती रजनी जैन एवं मनीषा जैन ने किया एवं आभार श्रीमती नीलम बांझल ने माना। कार्यक्रम में जिनालय ट्रस्ट अध्यक्ष भूपेंद्र जैन डॉ जैनेंद्र जैन आकाशवाणी उद्घोषक अनुराग जैन, भजन गायक संजय जैन राजेश जैन दद्दू एवं अखिलेश अरविंद सोधिया, डी एल जैन आदि गणमान्य उपस्थित थे।

राजेश जैन दद्दू, धर्म समाज प्रचारक

मूक बधिर बच्चों के साथ बांटी जन्मदिन की खुशियां

आजाद शेरवानी. शाबाश इंडिया

कोटा । लायंस क्लब कोटा सेंट्रल के सदस्य का जन्मदिन मूक बधिर बच्चों के साथ मनाया गया। क्लब अध्यक्ष मधु ललित बाहेती एवं सेक्रेटरी राधा खुवाल ने बताया की झालावाड़ रोड़ स्थित बधित बाल विकास केंद्र उच्च माध्यमिक विद्यालय (मूक बधिर विद्यालय) के 104 बच्चों को भोजन करवा कर क्लब सदस्य अनुज माहेश्वरी का जन्मदिन मनाया बच्चों के बीच केक काटकर खुशियां मनाई गईं। इस अवसर पर रीजन चेयरमैन दिनेश खुवाल, डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन महिला सशक्तिकरण आशा माहेश्वरी, डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन प्रोजेक्ट हंगर राजकुमार गुप्ता, ललित बाहेती, रामकृष्ण बागला, रोहिता माहेश्वरी, श्वेता माहेश्वरी, अनीश माहेश्वरी एवं वेदिका उपस्थित रहे।

नंदनवन ग्रीन सोसायटी मे गणपति उत्सव का आयोजन

आयुष पाटनी. शाबाश इंडिया

जोधपुर। पाल रोड पर स्थित नंदनवन सोसायटी में 13वा गणेश उत्सव का आयोजन हो रहा है, 7 दिन तक गणेश जी विराजमान होते है उसके पश्चात सोसायटी में ही विसर्जन किया जाता है, पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए विसर्जन की मिट्टी को सोसायटी के पैड पौधो में ही डाल दिया जाता है ।सोसायटी अध्यक्ष गौतम सालेचा ने बताया की नंदनवन ग्रीन सोसायटी में पिछले 13 वर्षो से हर वर्ष गणपति उत्सव का आयोजन हर्षोल्लास के साथ होता रहा है, आयोजित गणपति उत्सव में पांच दिन तक सांय कालीन में सोसायटी के सभी के लिए भोजन की व्यवस्था रहती है, गणपति उत्सव में इको फ्रेंडली प्रतिमा स्थापित कर उसका विसर्जन किया जाता है, गणपति के साथ साथ हर त्यौहार सोसायटी सदस्यो द्वारा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है , गणपति उत्सव के दौरान विविध प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम, अंताक्षरी, गेम्स आदि का आयोजन होता है ।इस पूरे आयोजन में सोसायटी सचिव बी एल पारिख,, यस बिल्डिंग के अध्यक्ष दिनेश छाजेड़, सोसायटी प्रमोटर श्याम लाल, सिद्धार्थ अग्रवाल एवं अनेक सोसायटी के गणमान्य व्यक्तियों का पूर्ण सहयोग रहता है।

मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने कहा...

मन को रोकना होगा मन से ही व्यक्ति सबसे ज्यादा पाप करता है

व्यसन मुक्ति समाज की कल्पना को साकार करना है, देशभर के प्रतिनिधि व्यसनों के खिलाफ अभियान चलायें

सागर. शाबाश इंडिया

व्यक्ति मन से सबसे ज्यादा पाप करता है इसके बाद वचन से पाप करता है फिर आता है काया का नम्बर अर्थात शरीर से बहुत कम पाप करता है सबसे भीष्म पितामह संसार में सबसे ज्यादा एक दिन में दस हजार योद्धाओं को मार सकते थे उनसे ज्यादा कोई इस जगत में प्रत्यक्ष रूप से कोई आज तक किसी को नहीं मार सका जबकि मन से तो एक मिनिट में स्वाहा कर देता है सबसे ज्यादा पाप मन से ही करता है। इसलिए सबसे पहले हमें मन को संभालना होगा यहां मन को संभालना की ही कला सिखाई जा रही है । कुछ कार्य ऐसे होते हैं जो होते हुए भी क्रिया में दिखाई नहीं देते ।अनंत शक्ति दिखाई नहीं देती अनंत शक्ति जब कुछ करती है तो उस शक्ति को सब महसूस करते हैं। दुनिया में जितनी भी वस्तुये है वे अस्तीमान नहीं है हर वस्तु एक दूसरे का निषेध कर रही है ।वह सत्य किसी काम का नहीं जिसको दूसरे का समर्थन ना हो। तुम क्या हो ये नहीं वल्कि ये बताओ कि दुनिया तुम्हारे लिए क्या मानती है आज सत्य धर्म है और कहा गया वस्तु स्वभावो धम्मों वस्तु के स्वभाव को ही धर्म कहा गया है उक्त आश्य केउद्गार मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने भाग्योदय तीर्थ सागर में 31वे श्रावक संस्कार शिविर को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। व्यसन किसी भी तरह का हो इसको रोकना होगा। मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजयधुर्रा ने बताया कि 31वे श्रावक संस्कार शिविर में मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज जी ने शिविर में देशभर में व्यसन मुक्त समाज के लिए अभियान चलाकर हम समाज को बचाएं। आज गुटखा के चलन ने कई घरों को बरबाद कर दिया इससे बचना ही होगा। मुनि श्री ने कहा कि व्यसन किसी भी प्रकार का हो उससे मनाव समाज का अहित ही हो रहा है और इसको जागृति के माध्यम से ही रोका जा सकता है। संस्कार कोई ऐसे ही नहीं मिल जाते एकाग्रता पूर्वक ग्रहण किया गया गुण ही संस्कार बन जाता है इसे इस तरह संभाले की ये जीवन भर आपके साथ रहें किसी ने कुछ कहा तो तुंरत भूल जाओ और गुरु ने कहा है तो उसे जीवन में संस्कार बनाकर इस तरह रखना कि आप अपने बेटे को संस्कार दे सकें गुणवान हो कर गुणहीन की वंदना करने से गुणवान भी गुणहीन हो जाता है।

दशलक्षण महापर्व का पांचवां दिन

सांच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी...

वीतराग धर्म का उत्तम सत्य लक्षण भक्ति भाव से मनाया पुष्पांजलि व्रत का हुआ समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों के चल रहे दशलक्षण महापर्व में शुक्रवार को वीतराग धर्म का उत्तम संयम लक्षण मनाया जाएगा। इस मौके पर सायकांल सुगन्ध दशमी मनाई जावेगी । श्रद्धालु मंदिरों में अग्नि पर चन्दन की धूप खेवेगें। इससे पूर्व गुरुवार, 12 सितम्बर को वीतराग धर्म का उत्तम सत्य लक्षण भक्ति भाव से मनाया गया। इस मौके पर मंदिर परिसर जयकारों से गुंजायमान हो उठे। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि दिगम्बर जैन मंदिरों में प्रातः श्री जी के अभिषेक, शांतिधारा के बाद दशलक्षण धर्म की विधान मंडल पर अष्ट द्रव्य से पूजा अर्चना की गई। इस मौके पर विद्वानों ने उत्तम सत्य लक्षण पर प्रवचन देते हुए बताया कि 'कठिन वचन मत बोल, पर निंदा अरु झूठ तज। सांच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।। उत्तम सत्य बरत पालीजै, पर विश्वासघात नहिं कीजै।। सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पैखो।। अर्थात मनुष्य को सत्यवादी होना चाहिए। उसे दूसरों के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहिए। किसी को कड़वे वचन मत बोलो तथा दूसरो की बुराई एवं झूठ बोलने से बचो। जैन ने बताया कि विद्वानों में मत भिन्नता के कारण कई स्थानों पर वीतराग धर्म का उत्तम शौच लक्षण मनाया गया तथा वीतराग धर्म के उत्तम शौच लक्षण की पूजा की गई। विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार श्योपुर प्रतापनगर के श्री चन्द्रप्रभू दिगम्बर जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व मनाया गया। प्रातः दशलक्षण महापर्व की पूजा की गई। सायंकाल जैन म्यूजिकल हाऊजी का आयोजन किया गया। तारों की कूट पर सूर्य नगर स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्रातः दशलक्षण मण्डल विधान पूजा एवं सायंकाल महाआरती के बाद णमोकार महामंत्र के जाप के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। शांतिनाथ जी की खोह स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र में विनोद जैन कोटखावदा, कमल वैद के नेतृत्व में अभिषेक, शांतिधारा के बाद दशलक्षण महापर्व की सामूहिक पूजा अर्चना की गई। आगरा रोड स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी में भगवान पार्श्वनाथ के अभिषेक, शांतिधारा के बाद दशलक्षण महापर्व मनाया गया। जौहरी बाजार के मोती सिंह भोमियो का रास्ता स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर जीऊबाईजी में युवा समाजसेवी कपिल बिलाला, विकास अजमेरा ने अभिषेक, शांतिधारा का पुण्यार्जन किया। इनके साथ ही कई दिगम्बर जैन मंदिरों में दशलक्षण महापर्व मनाया गया जिसमें प्रातः अभिषेक, शांतिधारा के बाद वीतराग धर्म के उत्तम सत्य लक्षण की पूजा की गई। सायंकाल महाआरती के बाद णमोकार महामंत्र के जाप तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम किए गए। बाडा पदमपुरा दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र में मुनि महिमा सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में दशलक्षण महापर्व मनाया गया। जैन के मुताबिक गत 8 सितम्बर से चल रहे पांच दिवसीय पुष्पांजलि व्रत का गुरुवार को समापन हुआ। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि शुक्रवार 13 सितम्बर को सुगन्ध दशमी मनाई जावेगी ।इस दिन मंदिरों में श्रद्धालुगण अष्ट कर्म के नाश करने के लिए अग्नि पर धूप खेवेगे। मंदिरों में ज्ञान वर्धक तथा संदेशात्मक झांकियां सजाई जावेगी ।

'कठिन वचन मत बोल,पर निंदा अरु झूठ तज'

सांच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी : प्राचार्य सतीश

जयपुर. शाबाश इंडिया। नेमीसागर कालोनी स्थित जैन मंदिर में दसलक्षण महापर्व के पांचवें दिन उत्तम सत्य धर्म विधान की पूजन की गई। इस अवसर पर प्राचार्य सतीश जैन ने सत्य धर्म पर प्रकाश डालते हुए हित,मित और प्रिय वचन बोलने और उसके फायदे के बारे में बताया। अध्यक्ष जे के जैन कालाडेरा ने बताया कि आज के पूजन स्थापना नेमीचंद, मुन्नी देवी, नितिन प्रिया, श्वेता, दिविषा लहर विद्यम ठोलिया एवं परिवार रहे। सायकालीन आरती के पुनयार्जक पूनम चंद अनीता, सौरभ नमिता, वैभव दिशा, आस्तिक, कायरा, गोरिक ठोलिया एवं परिवार, दीप प्रजवलन कर्ता एवं धार्मिक अंताक्षरी के पुण्यार्जक त्रिलोक चंद,सुलोचना, अनिल पुरवा, मनोज स्नेहलता, विवित्सा, नेहल एवं परिवार रहा। सायंकाल में जैन धार्मिक अंताक्षरी के लिए चार ग्रुप्स नेमी के प्रेमी, जिनवाणी के उपासक, वीर के बलवान और पारस के भक्त बनाकर शानदार आयोजन किया गया जिसकी प्रस्तुतिकर्ता शिखा जैन एवं पार्टी रहे। इसमें प्रथम वीर के बलवान,द्वितीय नेमी के प्रेमी, तृतीय पारस के भक्त और चतुर्थ जिनवाणी के उपासक ग्रुप के प्रतिभागी रहे।